भगवान श्री कुन्दकुन्द-कहान जैन शास्त्रमाला, पुष्प–१५१

ॐ

णमो जिणाणं।

विदेहक्षेत्रस्थ-विद्यमानविंशति-तीर्थंकरपूजा

-: प्रकाशक :-

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ-364250

प्रकाशकीय

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैनधर्म ही सनातम सत्य है ऐसा युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है, मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान देकर भी मुमुक्षु समाजके ऊपर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि प्रवृत्ति नियमित चल रही है। वे स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनित प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमन्दिरों एवं वीतराग जिनबिम्बोंसे भर गया।

सोनगढ़में परम पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीके अनन्य भक्त प्रशममूर्ति धन्यावतार स्वानुभवविभूषित पूज्य बहेनश्री चम्पाबहिनकी प्रशस्त प्रेरणासे प्रसंगोपात्त अनेकविध मंडलविधानपूजाएँ होती रहती हैं। इशके संदर्भमें पूज्य बहिनश्रीको यह पवित्र भावना स्फुरित हुई कि—'विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमन्धरादि विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिनपूजा'भी पुनः मुद्रित कराई जाये। पूज्य बहिनश्रीकी भावनाको साकार बनानेकि लिए यह संस्करण मुद्रित कराया गया है।

कविवर श्री थानमलजी अजमेरा विरचित 'विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशति तीर्थंकरपूजा' श्री नेमिचन्द्रजी बाकलीवालने वीर सं. २४४९में प्रकाशित की थी। उसके आधारसे यह नया संस्करण मुद्रित किया गया है। इसकी प्रथम आवृत्ति समाप्त हो जानेसे द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित की है। आशा है कि मुमुक्षु समाज इस प्रकाशनसे लाभान्वित होगा।

फाल्गुन शुक्ल दोज,
श्री सीमंधरस्वामी जिनमन्दिर
वार्षिक प्रतिष्ठमहोत्सव
ता. - -२०१२

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ-३६४२५० (सौराष्ट्र)

दर्शन-स्तोत्र

अहा ! प्रभो ! अवलोक आपको, नेत्र युगल मम सफल हुए;
मानव जन्म कृतार्थ हुआ यह, अक्षय सुख सम्पन्न हुए ॥१॥

हे जिनेन्द्र ! तव विमल दर्शसे, दुस्तर भवसागर गंभीर;
मानो पार हुआ क्षणभरमें, पहुँच गया हूँ उसके तीर ॥२॥

हे जिनवर ! तव दर्श-नीरसे, पावन मैंने गात्र किया;
निर्मल दृष्टि हुई अब मेरी, धर्मतीर्थ स्नान किया ॥३॥

प्रभो ! आपके शुभदर्शनसे, जीवन सफल हुआ मेरा;
भवदधि शीघ्र तिरा में मानो, किया मंगलोंने डेरा ॥४॥

हुई कषायें क्षीण, अष्टकर्मोंकी ज्वाला हुई शमन;
दुर्गति द्वार हटा मेरा, जब किया आपका शुभदर्शन ॥५॥

सब कठोर गृह शांत हुए, शुभ पुण्यफलोंने किया निवास;
विघ्न जाल सब नष्ट हुए, प्रभु-दर्शन जब किना सुखराश ॥६॥

घोर दुःखदायक कर्मोंका, जाल हुआ है नष्ट विभो !
सुख संपत्तिसे पूर्ण हुआ गृह, किया आपका दर्श प्रभो ॥७॥

आज घोर दुःखके उत्पादक, अष्ट कर्म हैं शांत हुए;
सुखसागरमें मग्न हुआ, प्रभु-दर्शनसे अघ हन्त हुए ॥८॥

मिथ्यातम हो गया नषट अब, विकसित हुआ दिवाकर ज्ञान;
आत्मबोध है उदित हुआ, जब किया दर्श प्रभुका सुखखान ॥९॥

जन्म सफल मम हुआ नाथ ! अघ कर्मराशिसे रहित हुआ;
प्रभुका पावन दर्श किया, मैं तीन लोकमें पूज्य हुआ ॥१०॥

प्रभो ! आपकी दिव्य मूर्तिका, हुआ हृदयमें आकर्षन;
दीनबंधु "वत्सल" भवभवमें, मिले आपका शुभदर्शन ॥११॥

ॐ

श्री वीतरागाय नमः

कविवर थानमलजी अजमेरा विरचित

विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजा

(दोहा)

सकल सुखाकर सकल पर, [१]सकल सकलजगनैन।
सीमंधर आदिक सकल[२], वीस ईश सुखदैन॥१॥

विहरत [३]अवनि विदेह जहं, मुनिजन होत विदेह[४]।
मैं स्वदेह पावन करन, नमूं नमूं धरि नेह॥२॥

(छंद चंडी, १६ मात्रा)

जय जगीश वागीश नमामी, आदि ईश शिव ईश नमामी।
परम ज्योति परमेश नमामी, सेवत शतक सुरेश नमामी॥३॥

ब्रह्मा विष्णु महेश नमामी, ज्ञानदिनेश गनेश नमामी।
वीतराग सर्वज्ञ नमामी, करुणावंत कृतज्ञ नमामी॥४॥

सृष्टि-इष्ट उत्कृष्ट नमामी, गुनगरिष्ठ वच मिष्ट नमामी।
निराकार साकार नमामी, निर्विकार भवपार नमामी॥५॥

निर-आमय निकलंक नमामी, जय निरभय चिदअंक नमामी।
ज्ञानगम्य अतिरम्य नमामी, स्वयं निकल निर्मोह नमामी॥६॥

विघ्नहारि त्रिपुरारि नमामी, गुन अपार जितमार नमामी।
निर्विकल्प निर्द्वंद नमामी, जय नाशनभवकंद नमामी॥७॥

---

१ शरीरसहित, २ सब, ३ पृथ्वी, ४ शरीररहित।

अक्षातीत यतीश नमामी, वीतशोक जितभीत नमामी।
शाश्वत सुखित सुवेश नमामी, अघहन वृष[1] चक्रेश नमामी॥८॥

अव्याबाध अछेद नमामी, जय निर्मल निर्वेद नमामी।
स्वयंबुद्ध अविरुद्ध नमामी, सदाशुद्ध जितक्रोध नमामी॥९॥

सुख अनंत भरपूर नमामी, जयो जगतदुखचूर नमामी।
असम-शक्ति अव्यक्त नमामी, मुक्ति-रमनि-संसक्त नमामी॥१०॥

रहित-आदि-मध्यांत नमामी, भव-दवाग्नि उपशांत नमामी।
हरन-अविद्या-ध्वांत नमामी, अनेकांत ओकांत नमामी॥११॥

जितविस्मय निश्चिंत नमामी, सूक्ष्म अमन निःसंग नमामी।
सदाप्रकाश विव्यक्त नमामी, धीश्वर केवलव्यक्त नमामी॥१२॥

श्रीधर श्रीविमलाभ नमामी, चतुरानन वरभाग नमामी।
कृष्ण-पुंडरीकाक्ष नमामी, विश्वंभर पुरुदेव नमामी॥१३॥

जगत-जीव-हितहेत नमामी, कमलासन वृषकेत नमामी।
ज्ञानईश ध्यानेश नमामी, जोगईश भोगेश नमामी॥१४॥

धाम तीन जगशीस नमामी, अचलप्रानचतुईश नमामी।
जय अनंत भगवंत नमामी, सुख अनुपम विलसंत नमामी॥१५॥

जगदाधार अपार नमामी, तत्त्व-भेद-विस्तार नमामी।
अशरन शरन सुसंत नमामी, जगमहंत अरहंत नमामी॥१६॥

अनुपमरूप अरूप नमामी, तत्त्वभूप चिद्रूप नमामी।
इम शुचि नाम अनंत तिहारे, तन मन पावन होत उचारे॥१७॥

इति अष्टोत्तरशत १०८ नामानि पठित्वा जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

अथ समुच्चय विंशतिजिनपूजा

(दोहा)

दायक यश जय सुमति सुग, सुख दुतिरूप अपार।
घायक विधि घायकनिके, लायक जग उद्धार॥१॥
सीमंधर आदिक सकल, वियद बाहु मित अैन।
आह्वानन त्रिविधा करूं, इत तिष्ठहु सुख दैन॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविंशतिजिनेन्द्राः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविंशतिजिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविंशतिजिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(रुचिरा छंद)

शीतल सलिल अमल तृटहारक, लेय सुधासम भृंगभरं।
जिनपति चरन अग्र त्रय धारा, धरूं तापत्रय नाशकरं॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन-नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय पटीर घसित वरकुंकुम, शीतलगंध सुरंग भर्‌यो।
सारसवरन चरन तव धारत, आकुल दाह अपार हर्‌यो॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

जीरक श्याम सुगंधित तंदुल, श्वेतवरन वर अनियारे।
लहि अक्षत अक्षयपद पावन, धरूं पुंज दृग-मन-हारे॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन-नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्व०

केतकि कंज गुलाब जुही वर, सुमन सुवासित मनहारी।
धारत चरन लहें समतासर, नशें मदनसर दुखकारी॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्व०

विंजन विविध छहों रस पूरित, सद्य सुसुंदर बलकारी।
श्रीपति चरन चढाऊं चरु वर, निजबल दायक क्षुतहारी॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

प्रजलित ज्योति कपूर मनोहर, अथवा पूरित स्नेह वरं।
करत आरती हरि-भव-आरति, निजगुन जोति प्रकाशकरं॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्व०

चूरित अगर पटीरादिक वर, गंध हुताशन संग धरूं।
खेऊं धूप जगेशचरन ढिग, चाहत हूं विधि नाश करूं॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्व०

फल दाडिम अेला [१]पिकबल्लभ, खारिक आदिक मिष्ट भले।
लेकर चरन चढावत जिनके, पावत हैं फल मोक्ष रले॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्व०

जल चंदन अक्षत मनसिजशर, चरु दीपक वर धूप फलं।
भवगदनाशन श्रीपतिके पद, वारत हूं करि अर्घभलं॥ जय०॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

१ कविबल्लभ पाठ भी है। पिकबल्लभ-आम और कविबल्लभ-केला होता है।

जयमाला

(दोहा)

द्वीप अर्द्ध द्वय मेरु पन, मेरु मेरु प्रति च्यार।
विहरत विभव अनंतयुत, अवनि विदेह मझार॥१॥

(छंद चंडी १६ मात्रा)

सीमंधर सुखसीम सुहाये, युगमंधर युग वृष प्रकटाये।
बाहु बाहुबल मोह विदार्‍यो, जिन सुबाहु मनमथमद मार्‍यो॥२॥

संजातक निज जाति पिछानी, स्वयंप्रभू प्रभुता निज ठानी।
ऋषभानन ऋषिधर्म प्रकाशन, वीर्य अनंत कर्मरिपु नाशन॥३॥

सूरप्रभू निजभा परिपूरन, प्रभु विशाल त्रिकशल्य विचूरन।
देव वज्रधर भ्रमगिरि भंजन, चंद्रानन जगजन मनरंजन॥४॥

चंद्रबाहु भवताप निवारी, ईश भुजंगम धुनि मनि धारी।
ईश्वर शिवगवरी दुख भंजन, नेमिप्रभू वृषनेमि निरंजन॥५॥

वीरसेन विधि-अरि-जय-वीरं, महाभद्र नाशक भवपीरं।
देव देवयशको यश गावै, अजितवीर्य शिवरमनि सुहावै॥६॥

ये अनादि विधि बंधनमाही, लब्धियोग निज निधि लखि पाई।
सम्यक बलकरि अरि चकचूरन, क्रमतें भये परम दुति पूरन॥७॥

अंतरीक आसन पर सोहै, परम विभूति प्रकाशित जो है।
चौसठि चमर छत्रत्रय राजै, कोटि दिवाकर दुति लखि लाजै॥८॥

जय दुंदुभि धुनि होत सुहानी, दिव्यध्वनि जगजन-दुखहानी।
तरु अशोक जनशोक नशावै, भामंडल भव सात दिखावै॥९॥

हर्षित सुमन सुमन बरसावै, सुमन-अंगना सुगुन सु गावै।
नव-रस-पूरन चतुरंग भीनी, लेत भक्तिवश तान नवीनी॥१०॥

वजत तार तननननन नननन, घुघरू धमक झुननन झुननन।
धीं धीं धृकट धृकट द्रम द्रम द्रम, ध्वनत मुरज पुरु ताल तरलसम।।११।।

ता थेई थेई थेई चरन चलावै, कटिकर मोरि भाव दरसावै।
मानथंभ मानीमद खंडन, जिन-प्रतिमा-युत पापविहंडन।।१२।।

शालचतुक गोपुर-युत सोहै, सजल खातिका जनमन मोहै।
द्विजगन कोक मयूर मरालं, शुक-कलरव-रव होत रसालं।।१३।।

पूरित सुमन सुमनकी बारी, बन-बंगला गिरवर छविधारी।
तूप ध्वजा गन पंक्ति विराजै, तोरन नवनिधि द्वार सु छाजै।।१४।।

इत्यादिक रचना बहुतेरी, द्वादश सभा लसत चहुं फेरी।
गनधर कहत पार नहीं पावै, 'थान' निहारत ही बनि आवै ।।१५।।

श्रीप्रभुके इच्छा न लगारं, भविजन भाग्य उदय सु विहारं।
ये रचना मैं प्रकट लखाऊं, या हित हरषि हरषि गुन गाऊं ।।१६।।

(छंद : धत्ता)

यह जिनगुनसारं करत उचारं, हरत विकारं अघभारं।
जय यश दातारं बुधिविस्तारं, करत अपारं सुखसारं।।१७।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ वर्तमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जो भविजन जिन विंश यजैं शुभ भावसूं,
करै सुगुनगनगान भक्ति धरि चावसूं।
लहै सकल संपति अर वर मति विस्तरै,
सुर नर पद वर पाय मुक्ति रमनी वरै।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अथ विदेहक्षेत्रस्थितजिनप्रत्येकपूजा। तत्रादौ

(१) श्री सीमंधरजिनपूजा

(दोहा)

करि निजध्यान प्रचंडबल, जये कर्म अरि चंड।
चिद्गुन ज्योति अखंडमें, मिले गगन द्वय खंड।।१।।

सो सीमंधर देव वर, दीनबंधु स्वयमेव।
करि करुणा मुझ दीनपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देव।।२।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(लीलावती छंद)

पय कमलसुवासित तृष्णानाशित, हिमगिरि सम सित तापहरा।
भरकरि वर झारी भ्रमतम हारी, धारत हूं त्रय धार धरा।।
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं।
अघगनकर चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

कसमीर सुरंगी घसि हरिसंगी, परिमलअंगी तापहरी।
प्रभु चरन चढावत सुख सरसावत, [1]जावत भव आताप टरी।।जय०।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

१ धर्मचक्रके स्वामी।

तंदुल शुभ सुंदर श्वेत सुमनहर, पावन दधिसुतदुतिहारी।
हे जिन करुणान्वित अक्षयपदहित, यजूं चरन तव भरिथारी ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं।
अघगनकर चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

सुमन सु मनहर विविधवरनपर, कुंद गुलाब जु आदि वरं।
लहिकर जिनपदवर पूजत सुखभर, संवरअरिसर नाश करं॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

मोदक बलकारन क्षुधानिवारन, दृगमनहारन मिष्ट बने।
निजगुणबलधारन ले सुखसारन, पूजूं जिनपद इष्ट घने॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

तमपटल विनाशन ज्योतिप्रकाशन, दीपक दिव्य उजास करूं।
भ्रमतिमिरविनाशन प्रभु जगपावन, पावन ऊपरि वार धरूं॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

लहि चंदन बावन चूरन पावन, अगरादिक करि संग भले।
खेऊं जिनपदतर ये निजमनधरि, निजगुनहर वसुकर्म जले॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल प्रासुक सुंदर मिष्ट मनोहर खारिक लौंग बिदाम भले।
जिन चरन चढाऊं हर्ष बढाऊं, चाखनकूं फल सुगुन रले॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल हरि अक्षत अरु सुभग सुमन चरु, दीप धूप फल पुंज सजूं।
मन आनंद अति धरि अर्घ सु लेकरि, श्रीपतिजूके चरन जजूं॥ जय०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

शिव शिवमय शिवकर शिवद, शिवदायक शिवईश।
शिव सेवत शिवमिलन हित, सीमंधर जगदीश॥१॥

(छंद चंडी वा रूप चौपाई)

जय जगपति वरगुन वरदायक, केवलसदन मदन मदघायक।
पर्म धर्म धर भ्रमपुर नाशन, शासनसिद्ध अचल अचलासन॥२॥

अखट अघट रस घट घट व्यापक, अनहत आहत सुगुनप्रकाशक।
धरत ध्यान दुरगति दुखवारन, जगजलतैं जगजंतु उधारन॥३॥

अशरनशरन मरन-भय-भंजन, पंकजवरनचरन मनरंजन।
निजसम करत जु मन तुव धारत, ज्यों पावकसंग इंधन जारत॥४॥

नृप श्रीहंसतनुज वर आनन, लच्छन वृषभ लसत अघभानन।
पुंडरपुर पुर है मन भावन, सो तुम जनमयोग भयो पावन॥५॥

लियो जनम जगजन दुखनाशन, शिर अमरेश धरत तुव शासन।
होत विरक्त देवऋषि आवन, भयो परम वैराग्य दिढावन॥६॥

शिबिका दिव्य कहार पुरंदर, हो सवार जिनधर्म-धुरंधर।
संग सकल तजि व्रत धरि पावन, लगे ध्यान मारग शिव जावन॥७॥

करि वटमार घातियाचूरन, शक्ति अनंत सजी परिपूरन।
पूरव जनम भाव वर भावत, ता फल ये अतिशय दरसावत॥८॥

बिन इच्छा विहार सुखकारन, भव्यनकूं भवपार उतारन।
यदपि देव तुम दृष्टि अगोचर, तदपि प्रतीति धरत हम निज उर॥९॥

जानत हूं तुम हो जगजानन, मैं किम दुःख कहूं चतुरानन।
दीन बन्धु दुख दीन मिटावन, चहिये अपनो विरद निवाहन॥१०॥

(छंद : हरिगीत)

वर वरन भवतपहरन आनन्द भरन दृगमन भावने।
युत सुरसपूरति गंध शुभ भविवृन्द अलि ललचावने॥
सर्वज्ञ आगम विटपके शुचि सुमन वरन रसाल ये।
धरि सुमति गुन सह 'थान' उर जगभालकी जयमाल ये॥११॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सीमंधर जिन पूजि करै जो थुति भली,
दहै सकल अघवृन्द लहै मनकी रली॥
निर आकुल ह्वै हरै मोह महंदकूं,
टारै भ्रम आताप लखै चितचंदकूं॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(२) श्री युगमंधरजिनपूजा

(स्थापना-दोहा)

लसै परमदुतिवंत छवि, लखि लाजै रवि मैन,
विगतमोह, मोहित करत, सुर नर मुनिमन नैन॥१॥

मैं जु दीन तुम दीनपति, यह वानिक स्वयमेव,
तिष्ठ तिष्ठ मम हित अबै, भो युगमंधर देव॥२॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीयुगमंधरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीयुगमंधरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीयुगमंधरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(शुभोदर छंद)

शैल सुरोदन निर्गत नीरसमं शुभ पावन।
हीरसमं सितशीतल ले तृट ताप नशावन॥
मोह महामल मोचनकूं त्रयधार धरूं धर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

ले वर रंगभरी शुचि केसर चन्दन बावन।
मेलि घसूं जल संग मिला कदलीसुत पावन॥
पूजत हूं पदकंज तुही अघताप सबैं हर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय चंदन निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

श्वेत सुधाकरकी करसे वरगंध अनीयुत।
ओघ अखंडित अक्षतके शुचि है जल क्षालित॥
ले वसुमी क्षिति पावनकूं पद पुंज करूं वर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

गंध भली मंडरात अलीगन है जिनपै जुरि।
सो समरायुध म्हेकत है शुचि रंग महा भरि॥
या हित तोहि चहोढतहूं न परै फिर वा कर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

भोगन योग महीपनके रसपूरित हैं षट।
चंद्रकला वर घेवर आदि बनाय घरें झट॥
सो तुव पाय चढावतहूं करिके क्षुतको उर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

सुन्दर दीपक जोति लसै तमवृन्द निवारन।
वारत हूं तुमपै करधारि कुज्ञान विदारन॥
आतमज्ञान अनूप प्रकाश करो हमारे उर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

चूरन ले अगरादिक चारु सुगंध महायुत।
जारनकूं विधिबंध करें हम पावक संयुत॥
जानि सुखाकर तोहि कह्यो शरनों अब आकर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

दाडिम श्रीफल अंब रसान्वित निंबुक पावन।
खारिक चोचक मिष्ट सुगंध भरा मनभावन॥
मोक्ष महाफल लैन धरे तुमरे पद त्याकर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

नीर सुचंदन चारु लिअे वर अक्षत पावन।
पुष्प सुव्यंजन दीप धरूं वर धूप हुताशन॥
ले फल पूंज अनूप करूं शुचि अर्घ सुखाभर।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

करै विविध लोला ललित, सुगुनगेह निज भोग।
शिवश्यामा संगम भअे, गये विरूप वियोग॥१॥

(सुंदरी छंद)

मैं अनादि रच्यो पररूपमैं, नहि लख्यो निज आतम भूप मैं।
सुन दयाल सहे दुःख मैं यहा, सब प्रतच्छ दुरै तुमतैं कहा॥२॥

अब कछु वरलब्धि बसायकै, श्रवनद्वार गिरा तुव आयके।
उरप्रवेश कियो सुखदायिनी, सकलविभ्रम मोह विथा हनी॥३॥

सहित सो अविधेय विधानतें, मिलत है संबंध कथानतें।
निज प्रयोजन इष्ट सु तासमें, लसत साधन शक्य सुजासमें॥४॥

सर्व ज्ञायक भाषित पावनी, है अनादि कृपा सरसावनी।
विगतलोकविरुद्धनतैं भली, निजप्रतीति स्वयं अनुभौ रली॥५॥

अलख है जिन! तू मम नैनतैं, लखि तथापि लियो तुव वैनतैं।
सुनि सुतत्त्व गिनो सरवज्ञता, विगतदूषणतें सुविरागता॥६॥

सुखदवैन प्रतच्छ प्रकाश है, त्रिविध लच्छन आप्त सुवास है।
दम दया तप ये सुखदाय है, सब मती इम कहत सुनाय है॥७॥

जित नहीं यह मूर सुखी नहीं, घर तजो परिपूर सुखी वही।
अतुल लच्छि लहै किम तो विना, नरकदायक लच्छि लहै घना॥८॥

द्युति विभूति विज्ञान विशेषता, बल अनंत सुशक्ति अशेषता।
असमरूप उदार समंकरं, अपरदेव नहीं तुमतैं परं॥९॥

करन तात सुवृच्छ अनंद हो, सुभग मात सुतारा-नंद हो।
लसत है गज लच्छन सोहनो, सुभगरुप त्रिलोकविमोहनो॥१०॥

यह कृपा युगमंधर कीजिअे, दरश मोहि प्रतच्छ जु दीजिअे।
तुम कहावत दीनदयाल हो, करि यही हमारी प्रतिपाल हो॥११॥

(धत्ता छंद)

जय जय जगसारं विगतविकारं सुखित अपारं जितमारं।
हनि अघ जंजारं सुनहु पुकारं युगमंधर भवभयहारं॥१२॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

युगमंधरकूं यजत सजत सुखसार है।
तजत संग दुर्बुद्धि सु सुमति अपार है॥
सुरतिय लोचन भ्रमर कंज मुख तासको।
होत भवन परिपूर अमल यश जासको॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(३) श्री बाहुजिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

बाहु सुभट जुगभेद बाहुबल बंडतैं।
सजि समभाव सनाह ध्यान असिचंडतैं॥
किये कर्मरिपु खंड सुतप रनखेतमैं।
थापत हूं तुहि देव यजनके हेत मैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद राग होली जंगलो तथा काफी)

जल सुन्दर शुचि श्वेत मनू सुरभोग लसै है।
सो भरि भृंग चढात तृषागद मूल नसै है॥
शुद्ध वचन मन अंग हृदेवर भक्ति सजै है।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

जो तज परसि समीर लगे तरुवृंद वसै है।
सो श्रीखंड चढात महा अघताप नसै हैं॥
धर सुरभि शरीर फेरि शिवस्थान लसै है।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

शुचि तंदुल अति श्वेत मनूं शशिजोति लसै हैं।
किधौं गुलिकगन मंजु लखे दृग मन हुलसै हैं॥

अक्षत औघ चढात लहे अक्षतपद ये हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३॥

जिस बल मार प्रचंड मार सुर नर उर देहैं।
सो वर गंध प्रसून भव्य निज करमें लेहैं॥
श्रीप्रभु चरन चढात मनोहर पीर नसै हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

स्नेह सुरभि रसपूर सुव्यंजन सुन्दर जे हैं।
फीनी घेवर आदि थाल भरि भवि कर लेहैं॥
श्रीपति चरन चढात रोग क्षुत मूर नसै हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

नासन तमव्रज मूर दीप घृतपूर लसै हैं।
अथवा ज्योति कपूर महादुतिकूं सरसै हैं॥
वारत छविपर भव्य लखै निज आतम जे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

ले श्रीखंड कपूर भूरि वर गंध सजै हैं।
गंधथकी मंडरात श्याम अलिपंक्ति सजै हैं॥
खेये पावकसंग नाशि विधि सुगुन भजे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

लांगल कनुक गवाक्ष आम्र निंबुक सरसै हैं।
नारंगी वररंग दाख रंभाफल लेहैं॥

श्रीधर चरन चढात मोक्षफल पावत वे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंधाक्षत फूल चारु वर दीप सजै है।
धूप फलौंघ मिलाय भाव निज शुद्ध भजै हैं॥
अर्घ चढावत भव्य सार निजनिधि गहि लेहैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै है॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

अनुभव सुमन सुयोगतें, उपजी सरस हिलोल।
किये दूरि परमल सकल, सरसत सुगुन किलोल॥१॥

(दीपकला छंद)

जय बाहुजिनेश्वर जगतराय, सुग्रीव पिता विजया सुमाय।
राजै मृगलच्छन शोभमान, शुचि जन्म सुसीमा नगर थान॥२॥

श्रमसलिलरहित कलिमल सुनांहि, वर रुधिर छीररंग अंगमांहि।
सम चतुर लसै संस्थान सार, शुचि प्रथम सार संहनन सुधार॥३॥

जितमाररूप राजैं अपार, तन गंधजई सब गंधसार।
सब शुभ लच्छन मंडित सुजान, बल अतुल अंग धारत महान॥४॥

हितमित वर वचन सुधासमान, ये दश अतिशय धारत महान।
फुनि तपबल केवलज्ञान होत, तब दश अतिशय अद्भुत उद्योत॥५॥

चहुंधा शत शत योजन सुभिक्ष, नभगमन जु वध नहिं जीव अक्ष।
उपसर्गरहित वर्जित अहार, दरशै चहुंधा आनन सुचार॥६॥

विद्या अशेष ईश्वर जिनंद, विन छांह फटिक दुति तन अमंद।
नहिं पलक-पतन नैनन-मझार, नख केश बढे नांही लगार॥७॥

चौदह सुरकृत राजें अनूप, तिन संयुत सोहे जगतभूप।
भाषा सु अर्धमागधि अनूप, सब जीव मित्रता भावरूप॥८॥

षट ऋतुफल फूल फलै सदीव, दरपन सम अवनि लसै अतीव।
सब जीव परम आनंदरूप, योजन भुवि सुर मञ्जें अनूप॥९॥

सुर मेघ करै जलगंधवृष्टि, पदतर [१]सरदृग-भुजकंज सृष्टि।
भुवि मंडल सोहै शशि सरूप, निरमल नभ अरु दश दिश अनूप॥१०॥

सुर चतुर-निकाय सु जय भनंत, वर धर्मचक्र आगें चलंत।
वसु मंगलद्रव्य लसै अनूप, इन अतिशययुत जिनराज भूप॥११॥

वसु प्रातिहार्य उपमा न जास, जहं तरु अशोक सब शोकनाश।
मनहर्षित सुर वरसात शूल, दिव्यध्वनि भवदुख हरन मूल॥१२॥

चामर मनु सुरसरिता तरंग, सिंहासन है मनु मेरुशृंग।
भामंडल भव दरसात सात, रिपु मोह विजय दुंदुभि जितात॥१३॥

अनुपम त्रय छत्र जु लसै शीस, ऐसी प्रभुतायुत जगत ईश।
सुख दरश ज्ञान वीरज अनंत, इम षट चालिस गुनधर महंत॥१४॥

तुम धन्य देव अरहंत सार, निर-आयुध निरभय निरविकार।
जुत विभव परम वर्जित सु संग, लखि नग्न अंग लाजे अनंग॥१५॥

तुम धारत हो करुना अपार, सुन देव अबै मेरी पुकार।
मम कष्ट हरो सब भेद जान, तुम सेव सदा जाचै सु ''थान''॥१६॥

(धत्ता छंद)

शिव! शिव शिवकर वारिधि भवतरि, अघटित सुख परिपूरभरं।
मन वच तन ध्याऊं गुनगन गाऊं, बाहूजिन अघ औघ हरं॥१७॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१. सुवर्ण कमल।

(अडिल्ल छंद)

ले पावन वसु द्रव्य पाणियुग धारिकैं।
यजें बाहुजिन भव्य गुणौघ उचारिकैं॥
ते निजगुन परिपूर होत भ्रम भानिकैं,
कर्मशत्रु दल हरैं शक्ति निज ठानिकैं।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(४) श्री सुबाहुजिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

समवसरन जिस भवन भवन भूषन लसै।
परमौदारिक देह देखि जन दुख नसै।
सो श्रीदेव सुबाहु दया उर ल्यायकैं।
तिष्ठ तिष्ठ जिनराज निकट मम आयकैं॥१॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(मनमोहन छंद चाल-नंदीश्वरपूजाकी)

शुचि वारिधि क्षीरसमान, नीर सुपावन है।
मन संतनसो अविकार, सुख सरसावन है॥

धरिहूं धरिपै त्रयधार, त्रय तप नाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

वर कुंकुम पूरित रंग, सजल पटीर घसें।
वह पूरित गंध गहीर, तीक्षण ताप नसें॥
धरिहूं तुम पायन ईश, भवतप नाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

शुचि तंदुल औघ अखंड सुंदर अनियारे।
द्युति धारत इन्दु समान, नैननको प्यारे॥
करिहूं वर अक्षत पुंज, अरि वसु त्रासनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

शुभ सायकमयन गुलाब, पंकज पावन है।
वर जाति जुही बकुलादि, सुमन सुहावन है॥
धरिहूं पद अग्र जु ल्याय, मनशर नासनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

पकवान सु सुंदर सार, घेवर आदि घने।
षट हू रसपूर सुगंध, मनहर सद्य बने॥
सो नेवज देहुं चढाय, सुबल प्रकाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

तमहारन ज्योति अनूप पूरित स्नेह लसै।
वह उज्ज्वल जिन तन मध्य, वारत इम दरसै॥
सो मानो विधि अवशेष, हेरत नासनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अगरादिक चूरन चारु, करि कर धारत हैं।
वर गंध हुताशन संग, हम इम जारत हैं॥
दुखदायक दुर्जन जानि, वसु अरि नासनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल खारिक दाख बिदाम, एला आदि घने।
अरु केला दाडिम आम, श्रीफल स्वाद सने॥
लहि धारूं तुम पद भेट, दुर्गति नाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन तंदुल फूल, चरु वर दीप लसें।
वर धूप फलौघ मिलाय, कहियत अर्घ इसें॥
तुव भेट करूं उमगाय, अघगन नाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

अजयजयी अजयी सु अज, भव अज भय-हरतार।
रहितकर्मरज कुजदलन, जय सुबाहु बलधार॥१॥

(छंद)

जय जिनदेव सुबाहुवरं, केवलभानुप्रभानिकरं।
है निसढिल्ल नरेश पिता, मात सुनंदा शोभयुता॥२॥

पावन जन्मपुरी अवधी, है भव ज्ञान त्रियुक्त सुधी।
चिह्न लसै कपिको ध्वजमें, इन्द्र नमें पदपंकजमें॥३॥

वैन सुधासम है सुथरे, सो गनईश प्रकाश करे।
मोह महाभ्रम नाशन है, तत्त्व सु सात प्रकाशन है॥४॥

जीव भन्यो उपयोगमई, और अजीव जु है जडई।
आस्रव हैं परप्रीतिहिसें, सो रसदायक बंधबसें॥५॥

संवर आस्रव रोक लसें, दे रस कर्म द्विभांति नसें।
सो यह निर्जरभाव लसे, है सुखदाजुत संवरसें॥६॥

मोक्ष सुबंधन मोक्ष करैं, ये शिवदाय प्रतीत धरैं।
क्षेत्र त्रिलोक अनादि लसैं, कारक धारक नाहिं इसैं॥७॥

ना हरता कोउ है जु इसैं, ते ध्रुव औ ऊपजै विनसै।
ये सत लच्छन मंडित हैं, भाखत यों शत पंडित हैं॥८॥

जीव भन्यो उपयोग जुई, पुद्गल है गुन च्यारमई।
गंध रु स्पर्श रु वर्ण धरै, औ रसरूप मिलै बिछुरै॥९॥

गौन सहायक धर्म गिनें, स्थान सहाय अधर्म भनें।
दे अवकाश अकाश सही, जो वरतावन काल कही॥१०॥

क्षेत्र रु काल जु भावनकी, होत लहाय जसी जिनकी।
ता समही सब रूप भसैं, सो सब देव तुम्हें दरसैं॥११॥

देखि इन्हें निजरूप गहें, सो तब ही सुखसिंधु लहें।
है परप्रीति नहीं उरमें, नाहिं तहां सुख है धुरमें॥१२॥

तो शरना इह हेत गही, हो हमकू सरधा जु यही।
मो मन तो पदकंज धरो, भो जगपाल निहाल करो॥१३॥

ये रसना मुखमें जु रहै, तौलग तो गुनगान चहै।
प्रीति हटै परतें हमरी, चित्त बसै छवि या तुमरी॥१४॥

औगुनकूं न हिये धरिये, दीन निहारी दया करिये।
''थान'' गही शरना तुमरी, व्याधि हरो जिनजी हमरी॥१५॥

(निशपालिका छंद)

रूप निज भालि कर भालि अति तीक्षनी।
ध्यान धनु साधि करि सैन्य विधिकी हनी॥
देव वरबाहु पदकंज जन जो यजैं।
ठोकी भुजदंड अरिमोह जयसों सजैं॥१६॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

चरन सरोज सुबाहु तने जन जो यजैं।
तजें अविद्याभाव स्वानुभवको भजें॥
पुत्र पौत्र धन धान्य सौख्य इह भव लहें।
परभव वरपद भोगि मुक्तिपदवी गहें॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(५) श्री संजातकजिनपूजा

(छप्पय छंद)

द्रव्य क्षेत्र यम भाव, भावनिजजाति भिन्न चिर।
चिरसंगी पर सकल, सकल निज भिन्न चतुक कर।
कर विचार शुभ येह, येह भवथिति असार लखि,
लखि अनूप चितरूप, रूप रस गंध वरण अखि।
अखिलै सुभिन्न अवलोकि निज, निज स्वभाव थिरभाव गिन।
करिकैं जु महर मोपरि इतै, तिष्ठ तिष्ठ संजात जिन॥१॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद मनहंस)

जल श्वेत गंगतरंगिनी सम ल्यायके।
भरि भृंग धारि चढात हूं उमगायके।
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

सुरवल्लभी वररंगपूरित पावनी।
घसि नीर चंदनसंग ताप नशावनी॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

शुचि सोमभा सम श्वेत अक्षत पावने।
जल क्षालि लै युत गंग नैन सुहावने॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

सर मैन सुंदर कुंद चंपक कंज है।
युत गंध वर्ण विचित्र राजत मंजु है॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

रसपूर व्यंजन पाक घेवर आदिही।
वर पूय खज्जक चारु चंद्रकलादिही॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

शुचि दीप सुन्दर धारिकै हर्षात ही।
जिन आरती करते नशै अघव्रात ही। दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

दश गंध चंदन आदि उत्तम हाथ ही।
करि अग्निसंगम जारि कर्म अनादि ही॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल पक्व चूतक चारु दाख अनार ही।
वर वीजपूरक लौंग खारिक चार ही॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज दीप ही।
वर धूप ले फल औघ अर्घ अनूप ही॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(छप्पय छंद)

जितदुराश दिगवास आश शिववास जास उर।
चिदविलास सुविकास अमितगुनरास ज्ञानपर।।
वरविभूतिपरकास दास सुरपति सब सेवैं।
धरत ध्यान तपराशि नाशि भ्रम निजगुन बेवैं।।

बल अतुल राशि अरि त्रास करि, असमशक्ति संजातधर।
करुना प्रकाशि निजदासपै सुख विकाशि अघ नाश कर।।१।।

(दीपकला छंद)

संजातक सुनि मेरी पुकार, विधिवश मैं दुख भुगते अपार।
वर भाग्य उदय तुम वचनद्वार, यह जानि परी हमकूं अबार।।२।।

विधि बंधनकारन पंच अेव, तिनमें मिथ्यात जु पंचमेव।
सो प्रथम नाम अेकांत जास, जिस बल नहिं पूरन वस्तु भास।।३।।

विपरीत नाम दूजो विरूप, दरसात औरसै और रूप।
तीजो सु विनयनामा कुभाव, जिस बल श्रद्धा चंचल लखाव।।४।।

संशय चतुर्थ जानो अहेत, सो सत्य प्रतीत न होन देत।
पंचम अज्ञान विशेष जानि, जिस बल न सकें निजगुन पिछानि।।५।।

फुनि अविरत विरत स्वभावहीन, परमाद अक्षवश स्नेहलीन।
कसि है जु कषाय सु करत क्षोभ, यह क्रोध मान माया रु लोभ।।६।।

उपहास्य अरति रति शोक जानि, भय जुगुप्सा रु त्रय वेद मानि।
चल तन मन वचन सुयोग तीन, ये बंधनकारन लिअे चीन।।७।।

सो बंध चतुर्विध है सुजान, पहले प्रकृती सु सुभाव मान।
थितिबंध करै थितिको विथार, अनुभाग तृतिय रस देनहार।।८।।

आतमप्रदेश परचय सुजानि, सो बंध प्रदेश चतुर्थ मानि।
करि भूलि बसै वसु भांति येह, परिवर्तन काल किये अछेह।।९।।

दुख भुगते सो कहि सकत नाहि, सब झलकि रहे तुम ज्ञानमांहि।
वर मात देवसेना विख्यात, नृप देवसेन पितु विमल गात।।१०।।

अलकापुर पावन जन्म थान, युत सूर्य-चिह्न राजत निशान।
वर धर्मचक्र धारत जगीश, तिम गुन नहि बरन शके फनीश।।११।।

तुम दीनदयाल कहात देव, यातें हम शरन गही स्वमेव।
विधिबंधयोग्य दुरभाव हानि, करि क्षायिक भाव कृपानिधान।।१२।।

यह जाचतहूं कर जोरि देव, भव भव पाऊं तुव चरनसेव।
तुव वचन सुधारसपान सार, ये ''थान'' चहे भव भव-मझार।।१३।।

(धत्ता छंद)

जय चिदवर वरछवि मोहअचलपवि, चारितधरधरनिधरं।
संभ्रमतपहर अवि तन-दुतिजितरवि, संजातक जिन श्रेयकरं।।१४।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीसंजातकजिनेन्द्राय महार्घं निर्व० स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

संजातक जिन सेव करत कर जोरिकै।
जानत भवि निजजाति नेह परमौरिकै।।
प्रकट होत सुख अघट सुघटमें ता घरी।
पूजें मनकी आश वास है निजपुरी।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(६) श्री स्वयंप्रभुजिनपूजा

(तोटक छंद)

चिदरूप अनादि स्वयं निज ही, लखि लब्धि वसै प्रभुता सुगही।
हम सत्य स्वयंप्रभु दासप्रतें, करिकै करुना अब तिष्ठ इतैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(त्रिभंगी छंद)

जल प्रासुक सुंदर गंध महा भर शीतलताकरि तृटहारी।
त्रय ताप विनाशन दुःखप्रणाशन धार धरूं धरि भरि झारि॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

केसर शुभरंगी परिमलचंगी घसि हरिसंगी तापहरी।
प्रभु चरन चढावत सुखसरसावत देह सु पावत गंध भरी॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

मुक्तासम सुंदर गंध भरा वर सखर अखंडित थाल भरैं।
पद अक्षय पावें कुगति नसावें जो भवि अक्षत पुंज करैं॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

सेवति सुंदर कंद जुही वर कंज गुलाब जु मनहारी।
शुभ जाति चमेली राय जु बेली सुमन सुहावन भरि थारी॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

घेवर रस भीने पाक नवीने हैं रंग भीने बलकारी।
क्षुतरोगनिवारन निजबलधारन चरन चढाऊं भरि थारी॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

शुचि वर्तिकपूरी कै घृतपूरी तमगनचूरी जोतिभरी।
भरिकै भरी थारी करत उतारी सुगुन उजारी होत खरी॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

शुचि अगर सुचंदन कदलीनंदन अलिगनरंजन चूर्णवरं।
वसुविध अरिनाशन दुःखप्रनाशन लेय हुताशन संग धरं॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल शुचि नारंगी कनक सुरंगी सुंदर पुंगी अंबवरं।
मिष्ट सु वर केला खारिक केला श्रीफल पीस्ता जायफलं॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत सुमन सुगंधित नेवज सुंदर स्वादवरं।
दुति दीप सुधूपं फल जु अनूपं ले शुचिरूपं अर्घकरं॥ हम०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

जन्मथान विजयापुरी, जयो मंगलानंद।
सुहृदमित्र नृप तात जसु, लसै चिन्ह ध्वज चंद॥१॥

जास गिरा पावन गदा, हरन मोह दुरयोध।
पावन पावन उर धरूं, पावन पावन बोध॥२॥

(सुंदरी छंद)

वसुधरापति देव स्वयंप्रभू, अरज दास तनी सुनिये विभू।
मम सु भूलि बसे बहु कर्म ये, चिर लगे भव कष्ट महा दिये॥३॥

करन मत्सरके परभावतें, बहुरि विघ्न भरे दुरभावतें।
करत साधनको उपघात सो, दरश ज्ञान प्रभाव नसात सो॥४॥

दुरत ज्ञान सु पंच प्रकार है, दरश आतमको न निहार है।
द्विविध वेदनि कर्म तृतीय है, रस शुभाशुभ देत स्वकीय है॥५॥

प्रथम सो सुखदायक मानिये, बंधत सो इह भांति प्रमानिये।
सकलजीव व्रतीजनकी दया, बहुरि दान चतुर्विधको दिया॥६॥

धरत संयम राग लिये सु जो, करत योगनकी चलता न जो।
असद होत जु दुःख विशेषतै, रुदन पान रु शोक कुवेषतें॥७॥

करत हैं वध जो दुरभावतें, अरु करैं परिदेवन चावतें।
स्वपरकैं परतैं परनाम ये, परत बंध महा दुखधाम ये॥८॥

भनत रूप विरूप सुदेवको, निगम संघ रु धर्म सुभेतको।
दरश मोह जु बंध महान ये, परत आतमशक्ति दुरान ये॥९॥

वश कषाय उदै परिणाम जो, करत चारित मोह जु तीव्र जो।
दरश चारित द्वैविध मोह ये, करत हैं निजशक्ति विछोह ये॥१०॥

बहु परिग्रह आरंभ जासके, नरक आयु बंधै जिय तासके।
कुटिल वा तिर्यंच गती सुदा, अलप आरंभ मानव जन्मदा॥११॥

सहित राग असंजम संजमं, फुनि अकाम तु निर्जरतापमं।
तप अज्ञान रु सम्यक हेतु हैं, सुभग देवगती यह देतु हैं॥१२॥

इम चतुर्विध आयु सुकर्म है, कुटिल योग विवाद सुधर्म है।
अशुभ नाम कुबंध सु लेत हैं, उलटि जो इनतें शुभको वहैं॥१३॥

तुरत बंध करै शुभनाम ते, द्विविध नाम भनें मतिधाम ते।
करत जो परकी विकथा कुधी, बहुरि आतमशंस करै सुधी॥१४॥

पर तने गुनकूं जु दुरात हैं, कुल जु नीच बहै नर पात हैं।
करत जो इनतें विपरीतता, धरत है कुल उच्च पुनीतता॥१५॥

कर्म गोत्र सु द्वैविध यों कहें, करत विघ्न अलाभ महालहें।
यह कुभाव टरें उरतें जबै, सुखित होय रहै शिवमें तबै॥१६॥

विरद दीनदयाल संभारिये, दुखित देख दया कर धारिये।
तिमिरमोह महा उरतें हरो, निजस्वरूप प्रकाशि सुखी करो॥१७॥

(छंद तरंगिक)

विध अनोकुहकी जरकी निरमूलता।
सुभग आतमके गुनकी अति थूलता॥
विघनकी हरनी करनी दुखसाल है।
जिन स्वयंप्रभुकी जयदा जयमाल है॥१८॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

स्वयंप्रभू जिनदेव सेव जो जन भजै।
थिर करि मन वच काय अनाकुलता सजै॥
करै वास उर जास रूप जगभूपको।
उदय होत है प्रकट भानु निजरुपको॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(७) श्री ऋषभाननजिनपूजा

(छप्पय छंद)

शुभगकीर्तिनृप तात वीरसेना सुमातवर।
जन्मथान अतिरम्य सुसीमा नगर सुखाकर॥
सिंह चिह्न ध्वज जास उदित व्रत अंशु भुवन थल।
कर निजऋद्धिप्रकाश तिमिर अघपटल सकल दल॥
जय ऋषभानन जिन भानवर, भव्यकोकगनशोकहर।
थापूं सु तोहि पद यजनहित, तिष्ठ तिष्ठ वरबोधकर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(मोदक छंद)

नीर महा अति शीतल लेकरि, प्राशुक सुंदर भुंगविषै भरि।
मोह महादव अग्नि बुझावन, हे जिन! पूजत हूं तुव पावन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

गंध भरा शुचि चंदन बावन, केसर मेलि घसूं मन भावन।
ताप त्रिवेद महातपनाशन, पूजत हूं तुमको वरशासन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

तंदुल औघ अखंडित उज्जवर, मंडितगंध हिमाभ मनोहर।
पावन मैं पद अक्षय कारन, पूजतहूं तुमको भयवारन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

कंज कदंब जुही करना वर, केतकि गंध सुगंध महा भर।
ले समरायुध पीर नशावन, पूजतहूं तुमको जगपावन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

घेवर बावन चंद्रकला वर, पापर खज्जक पाक बनाकर।
रोग छुधा जरतैं जु निवारन, पूजत हूं तुमको जगतारन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक जोति प्रकाश महाकर, वाति कपूर सुभाजनमें धर।
लोक अलोक स्वरूप निहारन, पूजतहूं तुमको शिवकारन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

ले अगरादिक चूरन वा वर, गुंज करै भ्रमरावलि जापर।
कर्म महारिपु अष्ट प्रजारन, खेवतहूं गुन अष्ट जु धारन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

सुंदर आम अनार सदाफल, खारिक दाख विदाम क्षुधादल।
मोक्ष महातरुके फल पावन, तोहि यजुं शिववाम रिझावन॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

नीर सु चंदन अक्षत केसर, नेवज पीप रु धूप सु लेकर।
ले फलसंयुत अर्घ अनूपम, तोहि यजूं जिन कर्मविथादम॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

तालु ओष्ठके स्पर्श विन, धुनि घनसम अवदात।
प्रकटत भ्रमतम हरनकूं, तरुण किरण मनु प्रात॥१॥

(पद्धरी छंद)

जय ऋषभानन मुनि जगतभूप, मैं अेकभावमय निजस्वरूप।
चिरतें परपरणति संग पाय, परिवर्तन भाव धरे अघाय॥२॥

निज पर मिल मूल सुभाव पांच, पहिचाने मुनि तुव वचन सांच।
पहलो उपशम जानों सु अेव, सो सम्यक्चारित युगलभेव॥३॥

दूजो क्षायिक सो नव प्रकार, है ज्ञान दरश अरु दान सार।
चिद लाभ भोग उपभोग जान, वरवीर्य सुसम्यक चरण मान॥४॥

ये प्रकट लसें तुममें सदेव, है मिश्र अष्टदशरूप अेव।
मतिश्रुतावधिज्ञान रु कुज्ञान, मनपर्यय फुनि त्रय दरश जान॥५॥

सो चक्षु अचक्षु रु अवधि अेव, फुनि लब्धि पंचविध है स्वमेव।
शुचि दान लाभ भोगोपभोग, युत वीरज पंच भये सयोग॥६॥

सम्यक् अरु चारित युगल जान, संयमासंयम सु अेक मान।
इम सब मिल वसुदश भाव येह, क्षय उपशम बल प्रकटै सुजेह॥७॥

उदईक अेकविंशति प्रकार, बरने जगपति जू तुम निहार।
गति नारक पशु नर सुर सु च्यार, तम मान कुटिल लालच असार।

तिय पुरुष नपुंसक वेद तीन, मिथ्यादर्श रु अज्ञान चीन।
फुनि असिद्धत्व वामें पिछान, लेश्या षट कृष्ण रु नील जान॥९॥

कापोत पीत अरु पद्म अेव, फुनि शुक्ल छठी जानो सुभेव।
फुनि पारणामिक सु भाव तीन, जीवत भव्यत्व अभव्य लीन॥१०॥

इनमें उदयिक भावनि प्रचार, परिवर्तन पंच किये अपार।
भुगते मैं कष्ट अनादि देव, तिनको तुम पार लयो स्वमेव॥११॥

इनतें उबारि लखि दीन मोहि, यह अरज करत है ''थान'' तोहि।
पर परणतितें मनको हटाय, निजरूप हमें दीजे दिखाय॥१२॥

(लीलाकर छंद)

धारें जगाधीशके वैनकूं जो हिअे माहि।
छारें सरूपी तनें पारणामी उदै ताहि॥
वारें चतू द्रव्यके पारिणामी भली भाति।
सोही लहै सौख्य जोही गहै आपनी जाति॥१३॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

ऋषभानन जग जान यजत नर जो सही।
टरै सकल दुःख द्वंद्व वरै अनुभवमही॥
मुक्ति महोरुह मंजु तहां लहलात है।
अनुपम सौख्य अनंत सुरस फल पात है॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(८) श्री अनंतवीर्यजिनपूजा

(दोहा)

गहि निज सरल सुभाव सर, साधि ध्यानको दंड।
हर अनंत बल मोहको, जय जय वीर्य अखंड॥

(छंद-झूलना)

मेघराजा पिता मंगला मात है चिह्न गजराजकी केतु राजै।
जन्मके जोगतै है महापावनी नग्र अवधी महासौख्य साजै॥
अनअंतवीर्य तू धीर परपीरहा पेखि छवि चारुको मार लाजै।
देवदेवेश हे तिष्ट तिष्ठो इतै थापिहूं तोहि मैं पूजकाजैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद चाल; राग गणगौरी)

प्रासुक जल गंगाद्रहके सम शीतल अति अभिराम।
हरन दुरास प्यासहित हे जिन! तोहि यजूं वरनाम॥
लुभाये नैना [1]रावरी छविपै छविधाम। लुभाये नैना०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

केसर चंदन कदली नंदन मेलि घसूं अभिराम।
भवभयतापनाशहित नुत मैं पूजूं पति शिववाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

१. आपकी।

शाल अखंडित सौरभिमंडित मुक्तासम शुचिधाम।
तोहि यजूं अक्षततैं हे जिन! पावन अक्षय ठाम॥
लुभाये नैना रावरी छविपै छविधाम। लुभाये नैना०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्रायक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।३।

सुमन गुलाब जुही कुंदादिक गंध लिये अभिराम।
अंग अनंगविथा हरिवेकूं धारूं तुव पद ठाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

सुरभि स्नेहपूर पाकादिक नेवज अति अभिराम।
लहि पूजूं श्रीपति पद तेरे करन छुधा बलखाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

भाजन कनक कपूर वाति धर तमनाशन दुतिधाम।
निजस्वरूपभासन तुव छविपर वारि करूं परनाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

चूरन अगर तगर अरु चंदन गंध लिये अभिराम।
खेऊं तुम पद अग्र जगोत्तम खोवन वसुविध नाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

केला दाडिम आम जंभीरी ऐला अति अभिराम।
भेला करि धरिहूं तुम पायन पावन शिवफलवाम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत समरायुध नेवज शुचि बलधाम।
दीप धूप फल अष्ट द्रव्य लहि अर्घ धरूं अभिराम॥ लु० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

धन्य जगतपति जन्म तुव, मनहु सुमंगल प्रात।
खिले भविनजिय-जलज जिम, नस्यो अमंगलव्रात॥१॥

(चौपाई छंद)

सुनो अनंतवीर्य जिनदेव, भूलि भाववशतें स्वयमेव।
भावकर्म रागादिक भाव, द्रव्यकर्म वसु प्रकृति स्वभाव॥२॥

देहादिक नोकर्म सु येह, लगे अनादि संग मम तेह।
सागर बंध लिये थिति सोहि, काल अनंत भ्रमायो मोहि॥३॥

योजन अेक बडो गहराय, इतनो ही मुखवेध सुभाय।
अैसो कूप कलपना करै, ताकूं पुनि अैसी विध भरै॥४॥

उत्तम भोगभूमि वरु खेत, तामधि जो उपजै शुभहेत।
भेड [१]सूनुकचअग्र सुलेत, खंड सूक्ष्म तिनके करि लेत॥५॥

भरि तामें काढै इह भाय खंड अेकशत वर्ष विताय।
कूप उदर जब खाली होय, सो व्यवहार पल्य करि जोय॥६॥

वर्ष असंख्य कोटिसम थान, तिन रोमनिकी राशिप्रमान।
करि कल्पना घात तिह करै, समय समय प्रति अेक जु हरै॥७॥

ये उद्धारपल्य मन आनि, दीप उदधि संख्याहित जानि।
याके रोम पुंज हैं जिते, कोडाकोडि पचीस जु तिते॥८॥

वरस अेक शतके फुनि जान, समय करै आगम परमान।
रोम उधार पल्यकी राश, करो घात तिन बुद्धि प्रकाश॥९॥

ते दश कोडाकोडि प्रमान, श्रद्धा सागर होत महान।
थितिप्रमान यातै कर जोय, ये तुम वैन जिताई सोय॥१०॥

१ भेडके बच्चेके बाल।

ज्ञान दर्शनावरण द्वि मान, वेदनि अंतराय फुनि जान।
करै बंध उतकृष्ट जु च्यार, कोडाकोडि तीस दधि सार॥११॥

सत्तर कोडाकोडि प्रमान सागरपर मोहनि थिति जान।
कोडाकोडि वीस दधि होय, नाम गोत्र की परथिति जोय॥१२॥

है तेतीस उदधिपरमान, आयुकर्मकी थिति पर जान।
अपर आयु वेदनि विधि दोय, थिति द्वादश मुहूर्त अवलोय॥१३॥

नाम गोत्र दोऊं विध जान, वसु मुहूर्त थिति अल्प प्रमान।
ज्ञानदर्शनावरण जु दोय, मोहनि विघ्न आयु फुनि सोय॥१४॥

थिति अंतरमुहूर्त इक मान, ये तुम भाषित है भगवान।
भुगती मैं परिवर्तनरूप, सो सब तुम जानतु जगभूप॥१५॥

है भयभीत शरण तुव गही, इनतैं वेग छुडावो सही।
दीनदयाल दयानिधि नाम, अब विलंब करनो किहि काम॥१६॥

(भ्रमरावली छंद)

अगतागत तू विगता विधिवंधविथा।
असमं वरभूतियुता अनुभोसुरता॥
धरता वरबैन सुधा शिव! तू शिवदा।
हमकूं वरभक्ति मिलो कर श्रेय सदा॥१७॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

देव अनंतवीर्य पदपंकज पावने।
पूजे भव्य उचारि सुगुन मन भावने॥
तन मन पावन तास होत सब सुख सरै।
आकुल दाह विहाय निराकुलता वरै॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(६) श्री सूरप्रभुजिनपूजा

(रोला छंद)

नागराय जसु तात मात भद्रा सुभद्रमन।
जनमपुरी विजया विलोकि मोहित है सुरगन॥
भववारिध मनु सेतु केतु तिमरारि चिह्नधर।
सूरप्रभु जिन इतै तिष्ठ कर कृपा दास पर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद सारंग, राग सोरठ)

जल सुंदर तृटहर अतिपावन है हिमसम अवदात।
भरि भृंगार धार धर धारत जनम मरन नशजात॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूं जी ववीर। भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

मलय जु मंजु महक ताकी पर षट्पदगन मंडरात।
घसि जलयुत तव चरन यजत जिन भवतप ततछिन जात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत सित शशिगो तिनके सम निरखत मन ललचात।
मंजु पुंज तव चरनकंज तर करत अखय पद पात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

कंज कदंब गुलाब केतकी मरवा अति महकात।
षटपदरंजक चरनकंजतर धरत समरसर जात॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूं जी ववीर। भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

फेनी त्रिकुट इंदरस गूझा घेवर मन ललचात।
चरु बलकार चढात चरन तव निजबल प्रबल लहात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

ललित जोति दीपक तमभंजन धरि भाजन अवदात।
करत आरती श्रीपति तेरी केवलदुति दरशात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

धूप अगर श्रीखंडचूर्ण पर, उमगे अलिगन आत।
ऐसो धूप धरत धूपायन, कर्म सबें जरिजात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

चोचक चारु निंबु नारंगी, दाडिम दाख सुहात।
दृग मनहर फल धरि तव पायन, भविजन शिवफल पात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत मनमथसर नैवज नैन सुहात।
दीप धूप फल अर्घ बनाकर पूजूं जिन हरषात॥ भवभय०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

पूरि परमदुतितैं रहे, भूरि भरमतम चूर।
हनि कुतर्क तारक प्रभा, सूरप्रभू वचसूर॥१॥

(तोटक छंद)

तव जोतिसरूप घटे न हटे, ति हिकूमत सर्व सदीव रटे।
अकलंक चिदंक समं असमं, वृष अंक निशंक स्वयं विषमं॥२॥

अकलं अचलं सकलं विमलं, अअलं सअलं सुवचं सुअलं।
अतनं अगनं सुमनं दमनं, रमनं वमनं भवदुःखगनं॥३॥

दुखदाघहतार्थघनं सघनं, गरुडं दुररागफणीदमनं।
अघ औघघनं घनहौ पवनं, दुरआसपिपासहनं सुवनं॥४॥

अघटं विकटं निकटं सुघटं, अतटं सुतटं विरटं सुरटं।
अखयं अभयं अजरं अमरं, सचिरं अचिरं सपरं अपरं॥५॥

विददं अमदं अगदं सुसदं, सुखदं शिवदं शुभदं सुविदं।
अमरं सभरं सुकरं निकरं, अगतागत तू जितकं समरं॥६॥

न क्षुधा न तृषा नहि रागधृतं, नहि द्वेष रु जन्म जरा न मृतं।
भय विस्मय रोग रु शोकहतं, नहि स्वाप महादुखदाय रतं॥७॥

नहि स्वेद रु खेद जु मोह मदं, नहि आरति और सुचिंत इदं।
यह दोष महा दश आठ हने, वरवैन दयारसपूर सने॥८॥

त्रय काल जु भूत रु वर्तन हैं, सुभविष्यत भेद कहे तुम हैं।
विन गोचर अक्ष पदारथ जे, सु जताय दिये सबकुं जिम जे॥९॥

करते अनुभौ सुख होत महा, नहि लोक विरुद्ध प्रसंग तहां।
भ्रममें भवि भूल रहे सु जिन्हें, सुखपंथ जताय दियो सु तिन्हें॥१०॥

समये इक जो परतीति धरै, वह जीव अनूपम शक्ति वरै।
परिवर्तन काल जु अर्द्ध समै, फिर तो भवकाननमें न भ्रमै॥११॥

यह दीनदयालपनो तुमरो, सु उचारि सकै मुख क्यूं हमरो।
अरजी उर ''थान'' तनी धरिये, अब दीन निहारि दया करिये॥१२॥

व्रत संयमभाव हिये धरिये, समतारस पूरि सुखी करिये।
परिपावन ये हम जाचत हैं, तुम सेव सदा अभिलाषत हैं॥१३॥

(देवराज छंद)

हटै कुभावकी घटा सुज्ञानभानको प्रकाश होत है।
हुवै समग्र सिद्ध काज उग्र पुण्य समाज सो लहै॥
दिवेश वेलिके समान अप्रमान सौख्यदान है यही।
करै जिनेशकी सुभक्ति है त्रिदोषतें विमुक्त जो सही॥१४॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सूरप्रभु जिन तनी सुखद जयमाला है।
शुभ संचयकरतार अशुभको साल है॥
धरै ज्योति मनु परम कलानिधिकी कला।
कुमुद ज्ञानविकसान तिमिरदुरमतिदला॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१०) श्री विशालकीर्तिजिनपूजा

(गजेन्द्रगति छंद तेईसा)

है गिरपुंडर[1] जन्मपुरी सुपुरी सुरराजसमान[2] विख्याता।
भूप विजेश पिता[3] सवितादुति दैन विजै[4] विजया वर माता॥
केतु[5] लसै [6]सुरईश्वर चिह्न विलोकत ही उपजै मन साता।
देव विशाल [7]विशालदया करि तिष्ठ इतैं अब हे [8]जगत्राता॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(गीता छंद)

जल [9]अमल गंध [10]सरोजजुत [11]तृटहार भृंग[12] भरायकैं।
प्रकटान शीतल सहज निज जिन चरन देहु चढायकैं॥
[13]पदनखर [14]जास [15]कलिंद [16]भव्यमलिंद [17]मोच [18]रसाल हैं।
शुचि[19] सुभग[20] समरसताल[21] सुगुनविशाल[22] देव विशाल है॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

१ पुण्डरगिरि, २ इंन्द्रनगरी, (स्वर्ग) के समान, ३ सूर्यकी कांतिके समान, ४ विजय देनेवाली, ५ ध्वजामें, ६ इन्द्र, ७ बहुत दया करके, ८ हे जगकी रक्षा करनेवाले, ९ स्वच्छ, १० कमल सहित, ११ प्यास हरनेवाला, १२ झारी, १३ चरणोंके नख, १४ जिसके, १५ तरवूज-सूर्य, १६ भव्यरुपी भ्रमरोंके लिये, १७ प्रफुल्लित करनेको, १८ रसीला तथा सुंदर, १९ पवित्र, २० सुन्दर, २१ समतारसके ताल, २२ अच्छे गुणोंकर संयुक्त।

कश्मीर सुभग सुरंग संग पटीर[1] नीर घसायकैं।
तपभाव आकुल हरन श्रीपति चरन देहु चढायकै॥
पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल हैं।
शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

उज्ज्वल अखंडित गंध मंडित श्याम जीर सुहावने।
जल क्षाल अक्षत अखयपदहित यजूं जिनपद पावने॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

वरवरन सुभग सुगंध पूरित घ्राण दृग ललचावने।
हम यजत लेय गुलाब आदिक सुमनवृन्द सुहावने॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नैवेद्य षटरसपूर बलकर सद्य सुभग सुहावने।
हम यजत जिन लहि चारु चरु सुर भोगसम मन भावने॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

लसत जगमग जोति ललित उदोत दीप प्रजारिकै।
हम स्वपदगुन सुप्रकाशहित जिन चरन धरत उतारिकै॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

वर धूप गंध अनेक मिश्रित [2]वातहोत्रविषै धरै।
मनु यजत जिनवर चरन भविके धूम मिस पातक टरै॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल पक्क मधुरे दाख दाडिम आम्रखारिक पावने।
लहि यजूं भवभय हरनको युग चरन मुनिमन भावने॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

१ चंदन, २. अग्निमें ।

जल गंध अक्षत सुमन सुंदर चारु चरु रसपूरही।
धरि दीप धूप फलौघ करि यजि जगतपति सुखपूरही॥ पद०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(कवित छंद)

कीरति विशाल है विशाल वरभाल जास।
मोचन कलंक लसै लोचन विशाल है।
बलीबल मोहके असंख्य बल दलिवेकूं।
बलबलिबंड भुजदंडको विशाल है॥
इंद्रहूतें अमित विशाल है विभूति जास।
चरन रसाल सेवैं सुमति विशाल है॥
धारें दिव्य देह हैं विशाल भूविदेहहीमें।
सुगुनविशाल देव कीरत विशाल है॥

(दोहा)

इक गहि गह्यो अनंत जग, अेक लखि लख्यो अनंत।
इक रमि रमे अनंत सुख, जिन विशाल जयवंत॥२॥

(मुरारि छंद-मात्रा १६)

जिन विशाल अरजी सुनि मोरी, शरन आय पकरी अब तोरी।
फसत पाटलट आपहि जैसें, करमबंध जकरे हम तैसें॥३॥

भ्रमवसाय परकूं निज जान्यो, निजस्वरूप अपनो न पिछान्यो।
विविध दुःख भवमें जु लहाये, नहि जु जात इक मुखतै गाये॥४॥

नरकभूमि भयदा अधिकाई, जुत प्रमाद हति जीवन पाई।
डंक सहस विछुवा मिल मारे, परस पीर इतनी विसतारे॥५॥

उसन शीत अतिचंड तहां है, गिरत मेरु सम लोह गला है।
जनमथान अति ही भयदाई, सकल रोग बहु हैं दुचिताई॥६॥

करत मार करुना नहि लावे, कलह रैन दिन तहां सुहावे।
निमिषमात्र तिसमें सुख नांहि, पचत दुःख दव अग्नि जु मांही॥७॥

तलत तेल मधि पावक जारै, पकर पांव भुविमांहि पछारै।
हनत हाड उर अंतरजाली, मरम भेद कर होत विहाली॥८॥

धरि करोत लकरीवत वेरै, धारि यंत्रमधि तहां सु पेरै।
तिलसमान सबही तन खंडै, मरनकाल विन प्रान न छंडै॥९॥

सकल लोक अन जो भख लेवै, तदपि भूख नहि शांति जु देवै।
सकल सिंधु जलपान जो ठाने, तनक नाहि तिनकी तिस भाने॥१०॥

मिलत नाहि कन अन्न जहां है, जल न बून्दसम सो जु लहा है।
अगनियोग कर ताम्र गलावे, मधु कुपान करके वह पावे॥११॥

करत नीच पलभक्षन जो है, भखत जोझि तिनके तनकूं है।
रुधिर राध स्रवती दुखदेनी, प्रबल क्षारयुत है सुखखैनी॥१२॥

करि जु लोहपुतरीजुत पावै, परसुभामरतकूं लिपटावै।
नेत्रनितें जु करत कुटिलाई, हरत तास दृग करि निठुराई॥१३॥

वदत वैन परकूं दुखदाई, करत तास रसना तिह ठांई।
सकल दुःख समुदाय जहां है, ससनचाल विकराल तहां है॥१४॥

वन जु भीम शिखरी भयदाई, करत घाव असिपत्र तहां ही।
नहिं समान कोऊ दुख तातें, कहन कौन सक कोटमुखातें॥१५॥

लहत आयु तहं सागरमानं, इम दुखौघ हम सहे अमानं।
पशु कुयोनिमधि जो दुख पाये, प्रकट तोहि कछु नांहि दुराये॥१६॥

दरश हीन सुरहू दुख पावे, परविभूति लखिकै ललचावे।
मुरझि माल जब जात अगारी, मरन जानि उपजे दुखभारी॥१७॥

चवत देखी वनिता दुख पावै, तनक नाहि वरन्यो वह जावै।
मनुषयोनि अतिपावन सोऊ, सुखित नाहि तिसहूं मधि कोऊ॥१८॥

वय जु बाल परकै वसि जानो, विविधरोग करि संयुत मानों।
तरुनभोगवसि यौवनमांही, प्रबल आश वयमध्य तहांही॥१९॥

शुभवियोग दुखयोग लहावै, शिथिल अंग वयवृद्ध कहावै।
विन पिछान अपनी मरि जावैं, थिर विना न थिरत कहुं पावैं॥२०॥

तुम स्वरूप थिर हो थिरगामी, थिर सुथानकरता थिरनामी।
थिर स्वभाव हमकूं दरसावो, दुखित जानि करुना उर ल्यावो॥२१॥

भ्रमन मेटि भवतें जु उबारो, अब विलंब मनमें न विचारो।
भुवन ईश शरनागत तोरे, करत "थान" विनती कर जोरे॥२२॥

(तोटक छंद)

कपटी लपटी सुहटी अति मैं, न घटी ममता सु जटी उरमैं।
तुमरो गुनगान सुठानत हूं, समये जु वही धनि मानत हूं॥२३॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जिन विशालपद भक्ति विशाल धरैं यजैं।
ता नरकूं सब विपति ततच्छिन ही तजैं॥
तन सुंदर सर्वांग सुभगछविकूं वहै।
टरै अमंगलवृंद सदा मंगल लहै॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(११) श्री वज्रधरजिनपूजा

(छप्पय छंद)

करकि क्रूरधुनि पूरराग अहिमूर नशावन।
भ्रमपहार चकचूर जोति अनुपम दरशावन॥
विपतवक्र सर्वज्ञ वीच दुतिवक्र झुर्मत।
डरत सृष्टिपर भाव धरनि मिथ्यात्वधर्रत॥
इम वैन वज्रवर शस्त्रधर, जय जय जिनपति वज्रधर।
करि कृपा दलतदुख दासके, तिष्ठ तिष्ठ इत देव कर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्। ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(हरिगीता छंद)

हिमशैल द्रहसम सलिल पावन तृटनशावन ल्यायकै।
वरभृंग भरि त्रय धार पदतर धरतहूं उमगायकैं॥
दुतिकंज मंजु सुगंध धर पद वज्रधर यजि शुभ सजैं।
तिन कुलिशधर हरधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

सुरवल्लभी घनसार घसि श्रीखंडतें जलसंगही।
शुचि सो शिलामुखवृंदरंजन गंध धारि उमंगहि॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

पतिरैन फैन समान दुति अति अैन जुत मनहार है।
हित अखय पद पदतर धरें पर चाहि क्षुतक्षयकार है॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

तृण द्रुमा सारसा सेवती शुचि सोन जाय सुहावने।
सो हरन पनसर शरन सुमनसमूह धरि मनभावने॥
दुतिकंज मंजु सुगंध धर पद वज्रधर यजि शुभ सजैं।
तिन कुलिशधर हरधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजैं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

घृत शरकरायुत विविध व्यंजन शुभग सद्य सुहावने।
वरनवर क्षुतहर सुगंधित अग्र धरि मनभावने॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

तमविघ्नभूरिविलानसूरज नाम तुव उर धारिकैं।
युतनेह पूरितनेह पावन दीपजोति प्रजारिकैं॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अेकांग कदलीनंद आदिक चंचरीक लुभावनी।
दश बंध जारन गंध दशविध दहन धारि जरावनी॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

सुभग होलिक अंब अेला पूररस निंबुक भले।
वररंग नारंगी सु आदिक लेयकैं फल मन रले॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जलगंध अक्षत सुमन चरु अरु दीप धूप फलौघही।
इम अर्घकरि प्रभु अग्रधरते हरत हैं अघ औघही॥ दुति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(चंद्रावर्त छंद)

वज्रअस्थिनसकील जु सकलं, वज्र जेम तनकी दुति अमलं।
शीलवज्र गहि कं गिरिहरता, देव वज्रधर तू जगभरता॥१॥

(मोतीदाम छंद)

अतत्त्वप्रतीत जु वज्र महान, विदारनकूं कनवज्र समान।
चये तुम कोमल बैन जगीश, गुहे तिनकूं गहिकै गन ईश॥२॥

कह्यो सब जीव अजीव स्वरूप, भने विधि बंधनकूं दश रूप।
मिले सब जीव रु कर्मसंयोग, बनें तहं बंध महा दुखयोग॥३॥

जबै रस देत उदै वह जानि, उपायबसैं सु उदीरण मानि।
रहै जबलों वरनो सत तास, बढै थिति सो उतकर्षण भास॥४॥

घटै थिति सो अपकर्षणरूप, हुवै जब संक्रमणं पररूप।
उदीरण ता विन है उपसम्म, उदीरण संक्रमणं सु जुगम्म॥५॥

नहीं जहं येह निधत्ति सु तेह, निकांचितमांहि नही चव येह।
जहां उतकर्षणको न प्रसंग, कछू अपकर्षणको नहि अंग॥६॥

उदीरण संक्रमणं जुग नाहि, इन्हीं वसि जीव भ्रम भवमांहि।
सुचिंतन पावक वज्र प्रजारि, दशूंविधि बंध किये तुम छारि॥७॥

छई निज जोति सबै जगपूर, भये भविजीवनके दुख चूर।
कह्यो दश धर्म सु जातिस्वभाव, मनूं भववारिधको वर नाव॥८॥

लहें तुम ध्यान किये निरवान, कहा विसमै इसमें भगवान।
तपोधन तो गुनमें मन धार, करें जगजंतु सुखी भय टार॥९॥

पशूगन हू तुव नाम रटात, विवेक विना पदवी सुरपात।
लखें तुमरी छविकूं भरि नैन, कहैं महिमा तिनकी किम वैन॥१०॥

अहो तुम जन्म भयो इह ठाम, लह्यो सुख नारक हू अघधाम।
अगोचर अक्ष निजातमरूप, तुम्हें उर धार लखें मुनिभूप॥११॥

मथें तुम वैन सुकोमलदारु, जगें कर जोरि कृशानु विचारु।
जरैं घन मोहमहावन भूरि, लसै निजजोति सबें जग पूरि॥१२॥

जयो तुम वैन करिंदसरूप, करै चिदचिंतन केलि अनूप।
अनंतनयातम अंग विशाल, हिताहितबोध सु उन्नतभाल॥१३॥

सुग्राहक भाल लसै वरसुंड, फबैं सितदंत प्रमान अखंड।
कृपाकरनीरत मत्त महान, झरै नयगंडनतें पयदान॥१४॥
रही मंडि भव्य सिलीमुख भीर, धरै समतामय गोनस धीर।
करै उपदेश सु गर्ज निषाद, उदै शुभ सुंदर घंट निनाद॥१५॥
अनातमभाव अनोकुहखंडि, दई भवसंसृतिबेल विहंडि।
महामुदमंगलकूं प्रगटात, लखे मुनि भूपनिकूं ललचात॥१६॥
यहै वर वानिक सो सुखदैन, बसो हमरे उरमें दिनरैन।
करो करुना करुनाजलसिंधु, सही तुम दीननके वरबंधु॥१७॥
तुही पदपंकजको उरवास, रहो जबलों नहि बंधविनास।
प्रतीति तुही वचकी वरदेव, रहै नित ही चरणांबुजसेव॥१८॥
मिलै सतसंगति ही सुखरास, हुवै जबलों शिव "थान" निवास।
अहो जिन! जाचत हैं हम तोहि, अजाचकतापद दे अब मोहि॥१९॥

(शिखरिणी छंद)

सुसीमाख्यं रम्यं जनमपुर शोभावरयुतं।
पिता पूर्ण क्रांतिः पदमरथनामा क्षितिधरं॥
प्रभारंभाहारी जननि जगत्राता सरस्वती।
जयो कंबूकेतू प्रणतभयहा वज्रधर त्वम्॥२०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

करत वज्रधर देव तनें गुनगानकूं।
ततछिन देत उडाय कुमतिके मानकूं॥
करत सुगतिसंबंध बंधविधिकूं हरै।
अमल अचल सुखपूर मुक्तिपदवी धरै॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१२) श्री चंद्राननजिनपूजा

(कुसुमविचित्रा छंद)

विधितमछायाविगत विराजै, दुरमतिकोकी उर दुखसाजै।
जय जिन चंद्रानन जगचंदा, मम हित तिष्ठौ गुनगनवृंदा॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीचंद्राननजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीचंद्राननजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीचंद्राननजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद चाल लावनी)

शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशि निशिनायक
हरहु तपत मोरी, शरन मैं चंद्रानन तोरी, शरन०॥
हिम सम शीतल विमल सलिल शुचि, भरू कनक झारी,
धरूं धार तव चरनकमलतर, जनम मरनहारी।
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशि निशिनायक०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

घसि चंदन करपूर नीरसंग, तपत पीर हारी।
पूजूं परम उछाह भाव धरि, तव पद त्रिपुरारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत औघ अखंड श्वेत शुचि, सुंदर भरि थारी।
करूं पुंज तव चरन अग्र जिन, पद अक्षयकारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

सुमन मनोहर विविध वरनके, वरसुगंधधारी।
हे शिवेश! तुह चरनन चोढूं, मदनपीरहारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशि निशिनायक०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नेवज विविध नवल बलकारक, सुंदर मनहारी।
धरूं भेट तव चरन अग्र जिन, रुजक्षुतक्षयकारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीप रतनमय वा घृतपूरित, अतिदुति तमहारी।
करूं आरती करि अब मम उर, निजगुन उजियारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

करि कपूर अगरादिक चूरन, परिमल मलहारी।
धूप विषमविधिबंध दहनकूं, दहन मध्य जारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

रसपूरित रसनामनभावन, फल शुचि सुखकारी।
विधिफल विफलकरन भयभंजन, करूं भेट थारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन गंधाक्षत केसर, नेवज बलकारी।
दीप धूप फल मेलि अरघ करि, यजूं विघन टारी॥ शरन०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

विमलभाव षोडश कला, पूरित अतिदुतिवंत।
वचनसुधासीकरनिकर, भविगन अमर करंत॥१॥

(चौपाई १६ मात्रा)

भरमभाव वय बाल मिताई, निजरसभास तुरुनता छाई।
शोभा सरस अंग वसु बाढी, रची प्रीति शिवतियतैं गाढो॥२॥

मज्जन मल परभाव उतारे, केश सघनरुचि रुचिर संवारे।
सम्यकदरश मुकुट सिर छाजे, उद्यम भाल तिलक वर राजे॥३॥

बंधुर वसन दशूं दिश राजे, दश वृषभेश मुद्रिका छाजैं।
शक्ति विकाश इतर महकावै, द्विविध धर्म कुंडल दरसावे॥४॥

नययुग लसत पादुका दोऊ, ध्यान कृपान चंड अरिखोऊ।
सुभग शील पटका छवि छाजै, भेदबुद्धि असितनुजा राजै॥५॥

वरविद्यायुत श्रीमुख सोहे, रचित तमोलराग वृष जो है।
वस्तु दिखावन सत्यमुख बानी, निज हित चतुर सकल सुखदानी॥६॥

इम षोडश श्रृंगार संवारे, वर विराग केयुर सु धारे।
दृढ प्रतीति भुजबंधन राजे, सुमन सुमनमाला उर छाजे॥७॥

सो वर मुक्तिरमनिका झूला, गुप्ति तीन कटिसूत्र सु मूला।
चर्या चरनाभरण विराजै, सरलसुभाव छरी कर छाजे॥८॥

तुर्रा वर विवेक झलकावै, सुमति सेहुरा सब मन भावै।
मन मतंग असवार सु राजै, प्रभुता छत्र परम छवि छाजे॥९॥

चामर द्विविध दयासित सोहै, अतुल तेज त्रिभुवन मन मोहै।
अनहद ध्वनि दुंदुभि घररावै, अनुभव वर निशान फहरावै॥१०॥

व्रत बरात संग है रंग भीनी, नृत्य करत निति ऋद्धि नवीनी।
अतिशयभाव असम दरसावे, विविधभांति भविमन ललचावे॥११॥

इम समाजसंयुत जगभूपा, राजत है मुद मंगलरूपा।
शिवश्यामा वर वरगुनधारी, निजबल प्रबल सकल खलहारी॥१२॥

पद उर धरत करत अघहानी, निजविभूतिदाता वर दानी,
सुगुन रटत कोउ पार न पावै, रटत रटत तुम सम ह्वै जावै॥१३॥

गाहि गाहि गुणसिंधु तिहारो, गणपति ज्ञान लह्यो नहिं पारो।
तो कहि पार कौन कवि पावै, निजभव सफल हेत गुन गावै॥१४॥

करि कृपाल वरकृपा तिहारी, हरहु धीर! भवपीर हमारी।
''थान'' शरन तोरी शिवनाथा, तजि विलंब करिहो शिवसाथा॥१५॥

(कुंडलिया छंद)

राजै नगरी पावनी, पुंडरीकणी जापुं।
बालमीकि भूपति पिता, सुंदर दयानिवास॥

सुंदर दयानिवास दयावति माता सोहै।
वृषभचिह्न ध्वजमांहि देखि सुर नर मन मोहै॥

जास चरनयुग सेय सौख्य भविगनकूं साजै।
सो चन्द्राननदेव ताप भवभंजन राजै॥१६॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

चंद्राननके चरनसरोजनकूं यजै।
सजै सकल सुख आज दुःखगन सब भजै॥
रसना पावन भई करत गुनगानकूं।
मिल्यो परमशिवथान आज मनुं ''थान'' कूं॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१३) श्री चंद्रबाहुजिनपूजा

(प्रवरललिता छंद)

चकोरं भव्यौघं दृगनसुखदा ध्वांतहारी।
अगम्यं राहो त्वं वचरसयुतं मृत्युहर्ता॥
कमोदं स्वेबोधं विकसितकरं पूर्णक्रांतिः।
इतै तिष्ठो तिष्ठो जनतमपहा चंद्रबाहु॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद चाल ठुमरी)

मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो। टेक।
प्रासुक नीर पीर तृटभंजन, जनमनरंजन मैं ल्यायो॥
दैन विषमभवरोग जलांजलि, तव पद पूजन उमगायो।
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

सुभग पटीर घसि जलके संग, कुंकुम मिश्रित महकायो।
व्याधि प्रबल आकुल कुल बारन, चरन चढावत हरषायो॥ मेटो० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

दुति मृगांक हिम जलज फेन सम, उज्ज्वल अक्षत मैं ल्यायो।
करि पावन वसुमी क्षिति पावन, चरन चढावन हरषायो॥ मेटो० ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

मदन बाण तृण द्रुमा सेवती, वर गुलाब दृग मन भायो,
झकध्वजकील शील श्रीदायक, तव पद पंकज ढिग ल्यायो॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

पूपक पाक मनोहर घेवर, मोदन-मन मोदक ल्यायो।
खोवन क्षुततरुमूल कुफलदा, तव पदतरि धर हरषायो॥ मेटो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीप कपूर पूरकैं घृततें, ललितज्योति तमहर ल्यायो।
कुमति कुहर हरिये मम उरको, करूं आरती हरषायो॥ मेटो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

शुचि चंदन वर कदलीनंदन, अगरादिक चूरन ल्यायो।
धरि पावक वसु कर्म प्रजारन, हरषि हरषि तुव गुन गायो॥ मेटो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

करना कैथ जमेरी दाडिम, अंबक आदिक फल ल्यायो।
शिवफल पावनकूं जगपावन, तोहि जजूं मैं हरषायो॥ मेटो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत अनियारे, कुसुम सुगंधित चरु ल्यायो।
दीप धूप फल लेकरि, पावन अर्घ चहोढूं उमगायो॥ मेटो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

हंस संत मन मानसर, भवदुखकंज तुषार।
सुखसमुद्रवर्धन विधू, चंद्रबाहु जयकार॥१॥

(दीपकला छंद)

यहु जगत जलधि ताका न तीर, षट द्रव्य शक्ति सत्ता सुनीर।
व्यय उत्पति ध्रौव्य तरंग जास, भरपूर भर्‍यो नहिं आदि तास॥२॥

शुभ द्वीप बसै सुख रत्नपूर, दुरगति दुख जलचर बसत कूर।
वडवानल मोह महाप्रचंड, विधि उदय मौज उछलै अखंड॥३॥

चढिकैं परपरणति पोत भूरि, मद मत्सर तम तस्कर करूर।
विचरैं दुरलालचके निकेत, धन संतनके गुन हतनहेत॥४॥

इहको नहि थाह कहूं जिनेश, तुम ज्ञानविषैं झलकैं अशेष।
निजगुन मुक्ताफल गहनहार, भविजीव रचैं अैसो प्रचार॥५॥

जिनवचनप्रतीति जिहाज सार, सत गुरु शुभमग दरसानहार।
अैसें करिकैं जु करैं प्रवेश, या विध फुनि श्रम ठानैं सु वेश॥६॥

वैराग्यदशाभाजन मझार, बैठें दुरमति सब कर उघार।
दृढ सांकल सुरति सु जोरि तास, राखैं निजथान लगाय जास॥७॥

जग आशा तजिकैं ह्वै निशंक, जगदीश्वरके ध्यावैं चिदंक।
अैसे स्वरूपजलमें अपार, खोजैं अपने गुन बार बार॥८॥

दिशि और धरै रंचक न ध्यान, तब पावत हैं अक्षय निधान।
जिन सो निज निज सो जिनस्वरूप, करकैं प्रतीति ह्वै जगतभूप॥९॥

वर भक्ति तिहारीतें जिनंद, प्रकटै सुख नानाविध अमंद।
इम मुनिजन मिल निहचै सुकीन, तुम ध्यानविषै नित होत लीन॥१०॥

ते पावत हैं शुचि शक्ति सार, सो सुरपतिहूमें ना लगार।
तुम धन्य जगोत्तम देवदेव, नित करत पाकशासन सुसेव॥११॥

वसु द्रव्य चढावत धरि उमंग, फुनि नाचत राचत भक्तिरंग।
विरयां समान रचि सब सुठाट, करि तन छिन लघु छिनमें विराट॥१२॥

सजि स्वांग विविध विधिके अनूप, सरसात नवूं रस देवभूप।
वर भूषण भूषित लसत अंग, मनु भूषणांग सुरतरु चलंग॥१३॥

धुनि भूषण मुख वादित्र भूर, मिलि अेकसनाको सुरहि पूर।
सम सुर तिताल त्रय ग्राम धार, लय ललित तरल तानें अपार॥१४॥

ततता ततता वितता भनंत, थेईता थेईता थेईता चलंत,छुम छुम छुम।
घुंघरू घमक चंग, द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग॥१५॥

सननननन सारंगी उचार, तुं तुं तननं तननं सितार।
तं तनन तनन मुहचंग चंग, झननननन झुनकै जलतरंग॥१६॥

टम टम टम टम टंकार पूरि, मंजीर बजै सुरतें सनूरि।
करतार झरर झररर झुनंत, समपै सब आवत अेकतंत॥१७॥

छिनमें जुगबाहुनकूं पसार, सोहै चल करपल्लव अपार।
इक कर कटि धरि करि ग्रीव बंक, इक कर शिव धरि नाचै त्रिबंक॥१८॥

मुकुटाकृति द्वैकर शीस धार, रतनांगणमें विचरै अपार।
झट झट झट अनहद होत पूर, इह झुरमट राजे जिन हजूर॥१९॥

फिर फिर फिर फिर फिरकी सुखात, पग नूपुर झुननन झुनननात।
शिर शेखर रत्नप्रभा सु सार, चक्राकृति है झलकै अपार॥२०॥

मकराकृत कुंडल झुलत कान, विजलीसम सोहत चल महान,
छिन भूपरि छिन नभमैं लसंत, परसैं शशि उडु अवनि महंत॥२१॥

छिनमें इक है छिनमें अनेक, दरशात विबुधपति विविध भेक।
सुर नर मुनि मनरंजन विधान, ताको कवि कौन करै बखान॥२२॥

हरि उरसरपूरित भक्ति नीर, तव दरशन मनु परसी समीर।
इह लीला ललित तरंगरूप, तन मन पावन कारन अनूप॥२३॥

मैं मो मन पावन करन हेत, उचरी मुख सुंदर सुख निकेत।
अब ''थान'' यही जाचै जिनंद, तव भक्ति बसो उरमें अमंद॥२४॥

(कुंडलिया छंद)

देवानंद पिता सुखद, मात रेणुका जास।
लसै पद्म लच्छन धुजा, नगर विनीता तास॥
नगर विनीता तास जन्मतें ही अतिपावन।
भविजनवृंदचकोर लोललोचन ललचावन॥
सदा उदित मुखचंद करूं ताकी नित सेवा।
चंद्रबाहु जयवंत सकल देवनके देवा॥२५॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जयमाला जयदाय चंद्रबाहू तनी।
जो उचरै धर भक्ति छारि मनकी मनी॥
घनी कला यह बात कष्ट टरि जानकी।
जन्म मरन मिटि होत अचलता ज्ञानकी॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१४) श्री भुजंगमजिनपूजा

(छप्पय छंद)

ललनमुक्तिगुनराग सुनत अनुराग प्रबल भर।
तजि बंबी मिथ्यात तेज लोचन प्रमान कर॥
हरि कंचुकी विभाव लसत तन सुगन प्रभावर।
अनेकांत फन प्रबल प्रचुर फुंकार ध्वनीधर॥
जिह्वा अनंत नय भेद लखि दादुर कुमत भजंत डर।
जय जिन भुजंगम तिज्ञानधर तिष्ठ तिष्ठ इत देववर॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद चाल, राग परज तथा विहाग)

लेय सलिल शीतल शुचि सुन्दर, मिष्ट मनूं मधुरूप।
भरि भृंगार धार त्रय धारूं, हरि भवदुख जगभूप॥
मैं तो जिन! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

घसि पटीर पावन जलके संग, युत केसर वररूप।
गंध अनूप बंध भव मोचन, अग्र धरूं सुखकूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत औघ अखंड अनीयुत, मुक्तासम शुचिरूप,
पुंज करूं अक्षय क्षिति पावन, तव पदतर जगभूप॥
मैं तो जिन! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

सोन जुही बकुलादिक सुंदर, सुमन समूह अनूप।
पूरित गंध धरूं तव पदतर, हरि मनमथ दुखकूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

घेवर पाक विविधरस भीने, नेवज नवल अनूप।
क्षुत परवाह दाहवेकूं अब, भेट करूं जगभूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

ज्वलित कपूर नेह घृत पूरित, दीपक जोति अनूप।
आरति हरन आरती तेरी, करूं लखन निजरूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

चूरन गंध भरा अगरादिक, अलिगनरंजनरूप।
खेऊं वसुविध बंध प्रजारन, तुम पद ढिग जगभूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

वीजपूर बादाम छुहारे, चोचक अंब अनूप।
ये फलपुंज परमफल पावन, भेट धरूं जगभूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन गंधाक्षत सुंदर, सुमनसमूह अनूप।
नेवज दीप धूप फल लेकरि, अर्घ धरूं जगभूप॥ मैं०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

जगत भ्रमन हरि अशनकरि, प्रकटकालके काल।
लसत ज्ञानमनितें अमल, जिन भुजंग वरभाल।

(चाल रेखता छंद)

सुनो अरजी अबै मोरी, हुआ गरजी निहोरूं मैं, टेर।

चिदानंद मैं अनादी हूं, नहीं कुछ आदि है मोरी।
सिवा अपनी चतुष्टयके, नहीं परवस्तु मेरेमें॥१॥

असल मालुम न थी मुझको, अबै गुरुबैनतैं जानी,
किये जडकर्मकूं संगी, परी ये भूल मेरेमें॥२॥

लगा इनकी मुहब्बतमें, लुटाया ज्ञानधन मैंने।
अहो उपकार अै साहिब!, किये इनपैं घनेरे मैं॥३॥

विहीने ज्ञान जड ये हैं, नहीं चैतन्यता इनमें।
कृतघ्नी होयकें मोकूं, भ्रमाया गति च्यारूंमें॥४॥

अगोचर बैन विन उपमा, सहे दुख नर्क दारुनमें।
जहां पल अेक कल नांहीं, कहा मुखतें उचारूं मैं॥५॥

निगोदी मोहिकूं कीना, दुराया ज्ञानकूं अैसा।
रहा इक वर्ण व्यंजनके, अनंते भाग मेरेमें॥६॥

उसास निश्वास इकमांही, किये मैं क्षुद्र भव अैसे।
अठारै बार हे साहिब! अहो जनम्या मरा हूं मैं॥७॥

पशु परजाय जो पाई, सहायी को नहीं तामैं।
नहीं धन धाम सामा को, नहीं वच आस्य मेरेमें॥८॥

क्षुधा रुज चंड है जामैं, तृषा अति ही भयंकर है।
मिलै तृण अन्त जल मुश्किल, लिखा जब भाग मेरेमें॥९॥

कही जाती नहीं मुखतें, हुई जो व्याधि तनमांहीं।
सही को कौनविध जानै, सही मनही जु मेरेमें॥१०॥

लदा बोझा बडा भारी, दई मारें मरमभेदी।
नहीं ताकत मजल दूरी, पडी मुश्किल जु मेरेमें॥११॥

सही हिम घाम घन बाधा, कही क्यों हूं नहीं जाती।
मरा जल ज्वालके मांहि, सु जाहिर ज्ञान तेरेमें॥१२॥

कसाईने गहा करमें, नहीं उरमें दया जाके।
करी है त्रास देदेकें, जुदाई प्राण मेरेमें॥१३॥

कभी पैदा हुआ वनमें, बडा डर क्रूर जीवोंका।
जहां रहना उसी थलमें, सदा डरता रहा हूं मैं॥१४॥

कभी जलमें जनम पाया, मुझे खाया जबरदस्तों।
निबल मुझसे निगह आया, गया वो पेट मेरेमें॥१५॥

हुआ पक्षी उडा नभमें, रहा डरता शिकारिनसे।
सहायी को नहीं हूआ, गिरा जब फंद उसकेमें। सुनो॥१६॥

कभी नरजन्म भी पाया, तहां रागादि बहु व्यापे।
सही बाधा वियोगादिक, कहूं कबलों घनेरीमें॥१७॥

विभव परकी निरख झूरा, लखी जब माल मुरझानी।
लहे दुख देव ह्वै अैसे, बसैं मनही जु मेरेमैं॥१८॥

लही लख योनि चौरासी, अनंती वेर गहि छांडी।
भ्रमन तिहूं लोकमें कीना, भई थिरता न मेरेमें॥१९॥

जिते दुख हैं जगतमाही, बचे कोऊ नहीं मोतैं।
इन्हीं बसि भूलिकैं भोगे, खता कुछ नाहिं मेरेमें॥२०॥

तु ही हाकिम गवा तू ही, तू ही लिखिया खुलासे कर।
खलासी कीजिये इनतें, रहें फिर नांहि मेरेमें॥२१॥

दयासिंधू कहावै तो, दया मो दीन पै कीजै।
दिखा निजरूपकी झांकी, चहूं क्या और तुझसे मैं॥२२॥

लहूं अनुभूति मैं मेरी, रहूं निजधाममें सुखसे,
चहै ये ''थान'' भव भवमें, यजूं पदकंज तेरे मैं॥२३॥

(शार्दूलविक्रीडित छंद)

संयुक्तं सुबलं महाबल पिता, नग्री जया जन्मभू।
सीमा रूपसुबुद्धि मात महिमा, चिह्नं सुचंद्रान्वितं॥
संसंतानंदपूर भूरि सुखदं, दूरीकृतं दुर्दुखं।
लोकालोकविलोक शोकदलनं देवं भुजंगं नमः॥२४॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जिन भुजंग थुति करत दुरित सबही डरै,
ध्यान द्वार उर धरत कर्म दादुर डरै।
टरै सकल भवपीर भीर परगुन तनी,
होत सिद्ध सब काज ऋद्धि अतुलित घनी।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१५) श्री ईश्वरजिनपूजा

(छप्पय छंद)

सुवृष वृषभ आरूढ झुंड भव झलक रुंड शृग।
जटाजूट निजभाव ध्यान पन्नग भूषण लग॥
गिरा गंग उछलंत त्रिगुन तिरशूल तेजकर।
विशदज्ञानसंयुक्त विश्वभासक त्रिनयनधर॥
चवविध सु घाति भस्मी सु तन, भाल चंद्र चिद्गुन झलक।
शुचि समवसरन कैलासथल, रहे निवास ईश्वर अलख॥१॥

(दोहा)

किये घातिविध विष अशन, पिये स्वानुभवभंग।
अनहत ध्वनि डमरू डमक, शिव गिरिजा अरधंग॥२॥

तम अघभर रविकरनिकर, ईश्वर अलख अमेव।
करि करुना करुणारणव, तिष्ट तिष्ट इत देव॥३॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थईश्वरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थईश्वरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थईश्वरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(रुचिरा छंद)

सम सुर भोग मनोज्ञ महाजल, शशिकरसम दुति धारी।
प्रासुक परम पीरतृटभंजन, निजमनमज्ञन भरि झारी॥
वरमतिवरद विरद भय भंजन, रमन उमा शिव त्रिपुरारी।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

युत अहिगन वन भूरुहवासित, त्रासिततप अति है सीरा।
घसि युतजलचंदन अलिगन, रंजनगंजन आकुलकुल पीरा॥
वरमतिवरद विरद भय भंजन, रमन उमा शिव त्रिपुरारी,
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी।
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

सम पयफेन विशद अतिपावन, मुक्ताफल मनुअनियारे।
पूरितगंध घ्राणदृगरंजन, भंजन क्षुत अक्षत प्यारे॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥३॥

सुमनसमूह विविधविधि पावन, वरणविचित्रित गंधभरे।
नाशन बाण मनोभव मनहर, सुखकर शीतल भेट धरे॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नव नैवेद्य सुरस रसपूरन, चूरन क्षुत शुचि बलकारी।
चंद्रकला वर घेवर बावर, फीणी मोदक भरि थारी॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

चिद्‌गुन अमित रोकि इह राजत, मोहमहातमव्रज भारी।
कर तिहिं नाश प्रकाश सुगुनकर, दीप चढाऊं तमहारी॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अगर पटीरादिक वर चूरन, धूप धनंजय संग धरूं।
जारन बंध करा दुरभावन, श्रीपति पांय प्रणाम करूं॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल रसपूर विविधविध पावन नारंगादिक थाल भरूं।
शिवफलहेत यजूं भवभंजन, तव पद कंजन भेट धरूं॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंधाक्षत सुमन मनोहर, नेवज नवल सु थाल भरूं।
दीप धूप फलपुंज सुहावन, ले वसुद्रव्य सु अर्घ करूं॥ वर०॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

शंकर शं करि सकलके, हरि विकलपगन भूरि।
पूरि पूरि उर सर सुरस, चूरि चूरि दुखचूरि॥१॥

(दीपकला छंद)

जय ईश्वर देव कृपानिधान, चितकोकशोकदल दिनसमान।
भविवृंदकोकनदकूं कलिंद, शिववधूवदनपंकजमलिंद॥२॥

सजि ध्यान जुगल भुजबल अखंड, जय मल्ल मोह जीत्यो प्रचंड।
तुम जय जय जय जगजलधिसेतु, निरमद कीनो रिपु मकरकेतु॥३॥

तुम नाममंत्रमहिमा अपार, अघघनवन जारनकूं तुषार।
ताके प्रभाव विष नशत भूर, नहि डंक सकै विषधर करूर॥४॥

मृगपति पद चाटत है सपेम, मदपूरित कुंजर शिष्य जेम।
थलसम जल जलसम अग्नि होत, दुरजन उर सज्जनपन उदोत॥५॥

नृप कुपित कृपा ठानैं अपार, रुजवृंद सकल नाशै असार।
इक छिनमें दुख दारिद्र खोत, सब शोक नशै आनंद होत॥६॥

कहुं डायनि सायनि भूत प्रेत, भय कर न सकै दुरमतिनिकेत।
सुत पंडित सुभग सुशील वाम, याचें किंकर वरसुमतिधाम॥७॥

जिहतैं यश वरनत नाकईश, वृषप्रीतिभाव वरतें मुनीश।
यातें महिमा कछु नांहि जास, जिहतें प्रगटै चिद्‌गुनप्रकाश॥८॥

उचरै छिन अंतसमें सुजास, नर पामर पावत नाकवास।
वरमाल धरै उर मुक्तिवाल, सहजानंद सुख उपजै विशाल॥९॥

दुरजय विधिवंधन होत दूरि, दुख जनम मरन व्यापें न भूरि।
इक जनम अलप सुखके प्रकाश, सुरतरु चिंतामणि सम न जास॥१०॥

यह अशमशक्ति महिमा निधान, नहि वरन सकै धरि च्यार ज्ञान।
ये जगतशिरोमणि मंत्रराज, दुरगतिदुखभंजनकों इलाज॥११॥

जबलों स्वतंत्र होवै न जीव, ये मंत्र बसो उरमें सदीव।
अरजी येही अवधारि देव, भव भव दीजे तव चरन सेव॥१२॥

गुनगान सुधारसमें किलोल, मनमच्छ करन चाहे अडोल।
मति होहु अश्रव्याभाव अंस, निवरो अज्ञान दुरभाववंस॥१३॥

भव भव सज्जन जनको सुसंग, निजचिंतभाव वरतो अभंग।
वर देहु यहै करुनानिधान, कर जोरि जुगल जाचै सु ''थान''॥१४॥

मेरी करनी पर मति निहार, निज प्रणतपालपनकूं विचार।
करतें कर गहि लखि दीन मोहि, करनो विलंब छाजै न तोहि॥१५॥

(सुरस छंद)

नृप गलिसेन तात अरु माता, ज्वाला सुजस्वमही।
नगर सुसीमा जास जनमहित, स्वर्गसमान भई॥
जीतें मोह सूर्यलच्छनकी जयध्वज फहर रही।
ता ईश्वरकी जयमाला यह, जयदा होहु सही॥१६॥

(दोहा)

जिन ईश्वरकी थुति यही, उचरत शुद्ध सुभाय।
प्रकटै सहजानंद सुख, सकल विघ्न टरि जाय॥१७॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जिन ईश्वर पदकंज सरस मन भावने,
जो पूजे मनलाय साख्य सरसावने।
कामधेनु समता प्रकटै उर जासके,
तृष्णा डायन वीर लगै नहि तासकै।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१६) श्री नेमिप्रभुजिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

त्वं निस्पृह निकलंक अंक चिद चारु हो।
मंडित अतुल विभूति सुशक्ति अपार हो॥
मैं आह्वानन करूं स्वहित चित त्यायकै।
भो करुणाकर नेमि! तिष्ट इत आयकै॥१॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(मदनमोहन छंद)

सित सुन्दर प्रासुक नीर, हिम तृट दाहहरा।
मैं जनममरन भय भीरु, धारूं धार धरा॥
[1]वृषस्यंदन-सुंदर-नेमि, शिवतिय प्रेम पगे।
वर नेम धरें जिन नेमि, यजत कलंक भगे।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

वर मलय म्हैकन मंजु, कुंकुम संग घसैं।
सरसत सुख अलि छकि गंध, परसत ताप कसैं॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

१ धर्मरुपी रथकी सुंदर धुरा।

अक्षतगन मनु कनहीर, सितपयफेनसमं।
शुचि मंडितगंध अखंड, रुजक्षयकूरदमं॥
वृषस्यंदन-सुंदर-नेमि, शिवतिय प्रेम पगे।
वर नेम धरें जिन नेमि, यजत कलंक भगे॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

शुभ सुंदर शुचि सुकुमार सुमन सुगंध भरे।
लहि केतकि कंज गुलाब, सेवति आदि खरे॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

रसयुत रसनाललचान, मोदक मनहारी।
वर घेवर चन्द्रकलादि, व्यंजन भरि थारी॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

तमभंजन दीपक ज्योति, उपमा फबत असें।
ये जारत मनु अघपुंज, है मिस धूम नसें॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

वर चूरन पूरन गंध, पावक संग धरें।
मिस धूम मनूं मन मैल, नभ मग गौन करें॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल दाडिम दाख बदाम, अेला लौंग भले।
रसपूरित रम्य रसाल, खारिक स्वाद रले॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत श्वेत, सुमनसमूह रले।
चरु दीपक धूप फलौघ, भरि करि थाल भले॥ वृष०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

जसु वच विमल कृशानुझल, दुरनय वचन पतंग।
गिरत विसन निज विजयहित, होत आप ही भंग॥१॥

कृपासदन मदमदनदल, विधि खल बल क्षयकार।
नमूं नेमिपदकमलयुग, अशरन शरन अधार॥२॥

(तारकवरन छंद)

तुम तो प्रभु नेम त्रिलोकधनी हो, तुमरी महिमा नहि जात भनी हो।
इकही गुन ज्ञान अमान अनै सो, वरुन्यो न जहै जिम है तिम तैसो॥

षट द्रव्य असंख्य अनंत प्रमाने, नहिं अंत अनादिहितैं थिति ठाने।
सबही गुण औघ अनंत सुधारें, गुण हू पर्याय अनंत विथारें॥

सु बहे गत वर्त्तत आगत जे हैं, झलकें तुमरे निजभाव विषै हैं।
तुमरो उर ध्यान सुभान प्रकाश्यो, [१]भ्रमभावविभावरिको तम नाश्यो॥

विकसी शुभ आस्रव राजिवराजी, उडुवृंद दुरास्रव ज्योति न साजी।
चकवो सदबुद्धि हिये हुलसाई, उलवा अविवेक न देत दिखाई॥

भवसंसृति बेलि भई कुमलानी, वर भांति पदारथ पांति पिछानी।
कुनया व्यभिचारनि जेम दुरी है, गति मोहनिशाचरकी न फुरी है॥

सुसुधारस प्यास प्रचंड बधाई, प्रगटी व्रतभोजनकी सु क्षुधा ही।
वट मार महाभट मार पिरानो, तटिनि तृसना जल जात सुखानो॥

मदभाव महोधरसे अकुलाने, व्यवसाय भअे गुनलाभ अमाने।
विन बंध प्रतीति भई उर अैसे, पतिके भुजतें नव नागरि जैसे॥

प्रकट्यो शिवको मग सहज सुभाअे, पथिकी चिदराव हिये हुलसाअे।
चहिहूं कर जोरि जिनेश इहै मैं, वरतो यह ज्योति अखंड हियेमें॥

---

१ रात्रिका

तुमरे गुनवारिधमें चित ध्याये, सुमिलै तुममें फिरकें नहि आये।
फुतरी मिसरी जल थामन ध्यावै, लहि थाह कहो किम आनि कहावै।।

अनुभो गत है तुमरी गति जानै, तवही गति पंचम है विधि भानै।
इसही हित तो मुनिनायक ध्यावें, पर आश्रित भाव सभी छिटकावें।।

सुसुधा निज छाक छके अविकारी, विचरे निरशंक भये भ्रमटारी।
तुमसो निजकूं निजतें नहिं ध्यावै, तबलों शिवथानककूं नहि पावै।।

सुप्रतीति यहै उर ''थान'' धरी है, तिहतें शरना तुमरी पकरी है।
शरनागत पालक है पन तेरो, चहिये हरनो अब तो रुख मेरो।।

(द्रुमिला छंद)

तिहके पदध्यान धनंजयमें घन पाप पतंगन जेम जरें।
तसु वानि छके गुरुभेषजसी, विधिबंधनविधि छिनमें निवरें।।
मद रावनही रघुवंशधणी नित नेमप्रभु तुव जो सुमरै।
सु लहै वर दर्शन ज्ञान चरित्र अनुक्रमतें शिवनार वरै।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

नेमप्रभू जसगान उचारत भावसूं।
पूज करें मनलाय होय शुचि चावसूं।।
ताके विकलपवृंद द्वंद सब ही टरै।
है निर्विकलपदशा शक्ति अपनी धरै।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(१७) श्री वीरसेनजिनपूजा

(स्थापना : छप्पय छंद)

आदि ओर नहिं जास जोर[1] अद्भुत प्रचंड जसु।
इंद्र चंद्र नागेंद्र जीति नहिं सकत बोध तसु।।
सकल जीव जडरूप ठानि है रह्यो गुमानी।
मोह वीर वरशक्ति रंच नहि जात बखानी।।
जिन वीरसेन वर वीर तुम, धीर धारि तिंह नाश कर।
है कृपावान निज दासपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देववर।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(त्रिभंगी छंद)

सुरसरिसमनीरं हरितृटपीरं, प्रासुकसीरं गंधयुतं।
भरि कर वर झारी धार उतारी, भारी भवरुजतापहतं।।
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

मलय जु वन आश्रित सुभग सुवासित, त्रासिततपहर अतिसीरा।
शुचि कुंकुमरंगी घसि तिह संगी, अरचत पद हर भवपीरा।। यति०।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

---

१. बल।

तंदुल अनियारे सित अति प्यारे, मनु दुतिधारे सीपसुतं।
शुचि सलिल पखारे पुंज सुधारे, अग्र तिहारे भावयुतं॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

शुचि सुमन चमेली चंपक रेली, श्यामा बेली पुष्पवरं।
निशिगंध सुरंगं सेवति संगं, हरत अनंगं भेट धरं॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

षट् रस रस भीने अन्न नवीने, नेवज लीने बलकारी।
मैं मन हरषाऊं क्षुत विनशाऊं, चरन चढाऊं भरि थारी॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक तमहारी ज्योतिप्रजारी, भरि वर थारी भेटधरं।
तमभ्रमव्रजभंजन विधिअरिगंजन, निजगुन सज्जन सौख्यकरं॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अगरादिक पावन गंध सुहावन, ले धूपायनमाहि धरूं।
तुम पदतर धारूं सुजस उचारूं, कलमष टारूं बंध हरूं॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल पक्व सुपावन नैनलुभावन, शिवफलपावन भेट करूं।
खारिक मनभावन दाख सुहावन, दाड़िम आदिक थाल भरूं॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंध सुहावन अक्षत पावन, घ्रानलुभावन पुष्प लिये।
चरु दीप रु धूपं फल शुचिरूपं, अर्घ समर्पं हर्ष हिये॥ यति०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

विषमचरित रनभूमिमें, अरि विभावगन जीत।
वीरसेन निजभाव गढ, निवसे निपट अभीत॥१॥
भवभूरुहदाहन-दहन, मनमलभंजन वारि।
पामर पावन परमपद, तेरो नाम उचारि॥२॥

(अडिल्ल छंद)

वीरसेन वरवीर सुगुन रनभूमिमें।
छके महारस वीर सुरस मद घूमिमें॥
शिवश्यामा अनुराग प्रबल उरमें धरैं।
ह्वै निशंक ललकार कर्मरिपुतें लरै॥३॥

करन चपलताधारक मनमातंगपैं।
भये उमगि असवार कर्मरनरंगपैं॥
समरसभाव सनाह सुरुचिकुल हांकिये।
साहस शुभको दंड सरल सायक लये॥४॥

भेदज्ञान वरमित्र संग सुखदैन है।
सहस अठारा शीलभाव वरसेन है॥
सेनानी निजबोध बडो बलि बंड है।
चारित सुभट सधीर अरीगन खंड है॥५॥

चक्रव्यूह मिथ्यात्व भेदि अरि सेनमें।
पैसे धारि उमंग विजय जस लेनमें॥
सात सुभट तह चूरि चरन आगें धरें।
चढि सप्तम गुनथान तीन अरिछय करें॥६॥

सजि समाधि बल जोरि अनूपम रिस बढे।
उपशम अवनि विहाय क्षपक श्रेणी चढे॥
सुभट छतीस प्रचंड नवें थलमें हरे।
दशमें सूक्षम लोभ नाशि उर रिस भरे॥७॥

सुकलध्यान पद दुतिय चंड असि हाथ ले।
द्वादशमें गुणथान सुभट सोलहदले॥
सकल घातिया प्रकृति तरेसठि चूरिकैं।
अद्भुत शोभा सजी बाल शिव पूरिकैं॥८॥

गुन अनंत परपूरि असम शोभा घनी।
परमौदारिक देह परमदुतितें सनी॥
परमभक्ति भरि इंद्र द्रव्य वसु शुभ सजें।
परम शर्मकरतार चरन तुमरे यजें॥९॥

रूप सुधारस पान सहस दृगपानतें।
करत न रंच अघात अचल पलकानतें॥
रसन तालु अस्पर्श अनाहत ध्वनि खिरै।
भव ग्रीषम तपहरन मेघ-झरसी झरै॥१०॥

जातिविरोधी जीव तजत सब बैर है।
शत योजन चहु ओर सुभिक्ष तहां रहै॥
जंतू वध नहि होय विभव जहं तुम तनी।
भई प्रकट इत्यादि दयानिधिता घनी॥११॥

करत तिहारो ध्यान सकल दुखगन नशै।
तुम पद निज उर बसे मनूं हम शिव बसे॥
तुम सब जाननहार कहा तुमतें कहूं।
चहूं और कुछ नहीं सुगुन तेरे गहूं॥१२॥

मेरे औगुन ओर न नेक निहारिये।
दीनबंधु निज नाम तनी पन पारिये॥
विनऊं तोहि जगेश जोडि जुग पानकू।
भव भव तेरी सेव देव! दे ''थान'' कूं॥१३॥

(सवैया इकतीसा)

भूमिपालभूपकुलकंजविकसानभान, भंजनवलीश बलिबंड मोहसैनाके।
भानचिन्ह केतु भवसिंधु लंघवेकूं सेतु, दरप विहंड महामैन दुखदैनाके॥
सुभगपुरंदरके पुरुसोपुर पुंडर है, रच्यो गयो कारन तिहारे जन्म लैनाके।
तप रनवीर धीरधारी देव वीरसेन, दायक अनंद जयो नंद वीरसेनाके॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वीरसेन जिन वीर धीर धर जो यजै।
वीररूप निज धारि सु कायरता तजै॥
ते वसुमी भुवि लसै शत्रु वसु जीतिसैं।
विलसै सुख निज धाम मुक्तिकी प्रीतिसैं॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(१८) श्री महाभद्रजिनपूजा

(छंद मंडल)

देवराज नृपके वर नंदन, उमासूनु सुखदाय।
विजया नगर परम पावन तहं, लियो जनम शुभ आय॥
चन्द्र चिह्न ध्वजधरन देववर, महाभद्र जिनराय।
थापुं तोहि यजन हित हे जिन, तिष्ठ तिष्ठ इत आय॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

शरन हम महाभद्र तोरी,
करमअद्रिहरकुलिश कृपापर कर सहाय मोरी॥ टेक॥
सलिल मिष्ट शीतल मन भावन जुत सुगंध डोरी।
मोचन मलविधिबंध धार त्रय करू चरन ओरी॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करम अद्रिहरकुलिश कृपापर कर०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चंदन बावनके संग पावन, कुंकुम घसि जोरी।
तुम पद युग अरचत शिवनायक, परसत शिवगोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत औघ अखंड अनीयुत, हंसत चंद्र ओरी।
करत पुंज तव चरनकंज तर, पावत शिवगोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

सुमन सुहावन घ्राणलुभावन पावन मन डोरी।
पावन तुव पावनतर धारत मैंन मनी मोरी॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करम अद्रिहरकुलिश कृपापर कर०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नेवज नवल सुहाने घेवर फीनी रसबोरी।
श्रीपति चरन चढात तिहारे, नाशै क्षत दौरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

वाति कपूर पूर दुति सुंदर, तुम सनसुख जोरी।
ज्ञानभान परकाशि नाशि तम, भई बुद्धि गोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

पूरनगंध धूप अगरादिक, पावकसंग जोरी।
तुम पद धरत बंधविधिकारन, जरै करम डोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल रसपूर मधुर अवलोकत, ललचत दृग जोरी।
तुम पद धरत चखत शिवफल वर, बंधै सुरस डोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत मदनायुध, चरु अमृत कोरी।
दीप धूप फल अरघ भेट तुव, करिकैं कर जोरी॥ शरण०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

परिवर्त्तन अहि अशनकर, वैनतेय तसु वैन।
महाभद्र जिन जयति जग, नमूं नमूं सुखदैन॥१॥

(मोतीदाम छंद)

जयो तुम भद्र गुनातमरूप, रची चिदचिंतन केलि अनूप।
विराग कहै तुमकूं कवि केम, रच्यो शिवभामनितें अतिप्रेम।।२।।

तजे किम भोग अहो जिनदेव, लिअे तुम भोग अनंत अछेव।
तज्यो किम लोभ अहो जिनराय, लही निधिज्ञान अनंत लुभाय।।३।।

तज्यो किम संग अहो जगपाल, धरो समवसृति भूति विशाल।
तज्यो किम बांधववर्ग सुदेव, किये जगजंतुन बंधु स्वमेव।।४।।

तज्यो किम मोह अहो जगपार, कियो सब ज्ञेयविषै विसतार।
तजी चलवृत्ति कहो किंह भाय, रमो तुम लोकअलोकन जाय।।५।।

तज्यो किम राज कहो जिनदेव, करें जगराज सबें तुम सेव।
तज्यो किम द्वेष कहो जगपाल, वसू विधिबंधनके तुम काल।।६।।

सही हम जान लई मनमाहि, घटी तुमरी कछ हू नहि चाहि।
तजे सब कारज जानि असार, गहे जितने जु लखे हितकार।।७।।

भली तुमरी महिमा दुखनास, दियो अधमी जनकूं दिववास।
तुहे मुखसो शशि चाहत कीन, बनात मनूं विधि तोरी नवीन।।८।।

करै तिहं षोडश भाग सु जोरि, बनें फिर ना तव डारत तोरि।
घटाबढि या हित होत सदीव, लख्यो थिर नाहिं परें निशि पीव।।९।।

लजे चरनाधर पाणि निहारि, कढै नहि कंज रहै गहि वारि।
ध्वनि सुनि लज्जि भयो घनश्याम, प्रभालखि मेरु गह्यो इक ठाम।।१०।।

लखें तव तेज चितें दुचिताय, मनूं यह भान भमें नभमांय।
कहै उपमा तुमको कवि कोय, लसै तुमरी तुम ही मधि सोय।।११।।

प्रभू हम दीन त्रपापट टारि, करी थुति ये अपनो हितधारी।
क्षमों हमरे सब औगुन देव, कृपाकरि देह सदा तुम सेव।।१२।।

गही शरना तुमरी अब देव, भये सब कारज सिद्ध स्वमेव।
चहै यह ''थान'' दुहूं कर जोरि, अनातमभाव हुवै न बहोरि।।१३।।

(मालिनी छंद)

इति जिनगुनमाला, पर्म आनंदशाला।
सकलविघनटाला, शुद्धरूपा विशाला।।
करि तन मन शुद्धी, जो स्वरों धारि गावें।
विलसि सुख दिवाले, मुक्तिश्री सो लहावे।।१४।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

महाभद्र गुनभद्र भद्र मनतें भने।
कर्म अद्रि चकचूरि अचल सुख सो सने।।
विलसै सुख सुरबालकमलिनी बागमें।
रमें बहुरि चिरकाल वधूशिव लागमें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(१६) श्री देवयशजिनपूजा

(खरगा छंद)

देवयशगान तो करत मुदठानिकैं, धरतमुनिध्यानतें मोक्ष पावै खरो।
प्रानधारीनको प्रानरक्षक तुही, ज्ञानधारीनमें ज्ञानधारी वरो।
भूरि आनन्दके कंद सुखवृंद दे, चूरिये दुंददल महर मोपै करो।
देव देवेश जू थापिहूं तोहि मैं, तिष्ठ तिष्ठो इतै कष्ट मेरो हरो।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्,

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्,

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(राग पीलू)

तेरी भक्ति बसी मन माही, मैं तो पूजूं पद हरषाई॥ टेर॥
धुनि सुरसरी समजल प्रासुक, ले भृंगार भराई।
करन नाश परत्राह तृषा त्रय, धारूं धार धराई॥
तेरी भक्ति बसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

शुचि कुंकुम चंदन मलयागिर, घनरस संग घसाई।
ताप महाआकुल कुल बारन, तुमरे चरन चढाई॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

सित हिमाभ तंदुल अनियारे, धारि रकेबी माही।
वसु गुनयुत वसुमी क्षिति पावन, पुंज करूं तुम माही॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

पूरित गंध सुमन गन ऊपर, अलि अबला मंडराई।
करन सुमन पावन हित हे जिन! भेट धरूं मैं लाई॥
तेरी भक्ति बसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

नेवज मधुर नवल बलकारन, लोचन लेत लुभाई।
करन पुष्ट निजरूप ज्ञानबल, भेट धरूं उमगाई॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीप कपूर पूरि घृत शुचिकैं, सुंदर जोति जगाई।
आरति हरन आरती तेरी, करिहूं मन मुददाई॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

अगर तगर कदलीसुत आदिक, चूरि सुधूप बनाई।
श्रीपतिचरनकंज तुमरे ढिग, खेऊं विधिछयदाई॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

दाडिम दाख आम नारंगी, ले फलराशि सुहाई।
शिवफल हेत भेट तुमरे पद, ढिग धारूं उमगाई॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत पुष्पावलि, नेवज ले बलदाई।
दीप धूप फल वसुविध सुन्दर, अर्घ धरूं तुमपांही॥ तेरी०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

विधिघन विन चिदरविछटा, दमकि रही दुति अैन।
छकित होत छवि निरखिकै, सुन नर मुनि मन नैन॥१॥

(दोधक छंद)

तारक हो तुम ही जगस्वामी, बारक भो दुख अंतरजामी।
भौन विकाश दिनेश तुही है, शुभ्र गिरा धरईश तुही है॥२॥

तू विधि है चतुराननधारी, मर्दन तू मुर मोह मुरारी।
और कषायविषैं बसि सारे, हो तुम द्वेष दोष दुख टारे॥३॥

यद्यपि मोह तज्यो तुम स्वामी, ना करता हरता शिवधामी।
तद्यपि ध्यान धरें जिन तेरो, सिद्ध फुरै मनवंछित मेरो॥४॥

यह उरमें दृढता हम धारी, तव पद सेव गही त्रिपुरारी।
यह भव कानन भीम गुसाई, शैल विभाव तहां दुखदाई॥५॥

श्रेय सबै करता तुम त्योंहि, ना कछु संशय है विधि योंही।
आस्रव पीर झरें झरने हैं, भूरुह बंधसमूह घने हैं॥६॥

मोह महा मृगराज गलारै, धीर्य तहां जगजंतु निवारै।
भील मनोज तहां दुखदानी, लूटनकूं शुभ सोंज सुहानी॥७॥

प्रीति जहां जुरि झांसि रही है, द्वेष महाभयदैन अही है।
है तृष्णा जल माल डरानी, च्हेल निगोद धरै दुखदानी॥८॥

बारण मत्त जु मान जहां है, आरण महिष जु क्रोध तहां है।
मत्सर रींछ जहां घुर्रावै, लोभ दरार अथाह दिखावै॥९॥

कर्म उदै फल द्वैविध तामें, है हितकारक अेक ना जामें।
आरति भाव बुरे वनचारी, पावक वेद कषाय करारी॥१०॥

अक्षविलास पलास विकासै, आकुलभाव पिशाच जु भासै।
छांह घनी घन है भ्रम जामें, सूझत ज्ञान दिनेश न तामें॥११॥

भाव असत्य ढिगां भरमायो, मैं चिरतें शिवपंथ न पायो।
लब्धिबसाय गुरुमुख गाई, दीपशिखा तुमरी ध्वनि पाई॥१२॥

चाहत हूं शिवराह गही मैं, जाचत हूं कछु और नहीं मैं।
पंथ सहायक ध्यान तिहारो, संबल दे निजबोध हमारो॥१३॥

बाहन शुद्ध क्रिया कर दीजे, संग सधर्मिनको नित कीजे।
तो चरचा मगमें नित होवै, भक्ति सराय जहां हम सोवैं॥१४॥

उद्यम है अथवा मगमाही, राह मिलै शुचि सम्यक् याही।
“थान” लहूं जब लों शिवनीको, ये सब होहु सहाय धनीको॥१५॥

(दोहा)

जयो नृपति स्तवभूत सुत, गंगा उर अवतार।
स्वस्तिक ध्वज जसु जनमथल, नगर सुसीमा सार॥१६॥

(मेघविस्फूर्जित छंद)

तजै शंका कांक्षा निजहितरता भाव संवेग धारें।
सजैं आनंदौध पुलकितवपू शुद्धस्तूती उचारें॥
लहे सो संबोधं सकलसुखदं कीर्ति भूलोक छावै।
हुवे शक्री चक्री अचल अमलं मुक्तिभूमी कहावै॥१७॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जयो देवयश देव देवपति पूजकी।
भक्ति महासुख दैन कला शशि दूजकी॥
करै सिन्धु सुख वृद्धि सिद्ध सब दायनी।
घायक सकल कलेश कलंक पलायनी॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(२०) श्री अजितवीर्य जिनपूजा

(कवित्त छंद)

भास घन चेतनको विशद विकास जास,
त्रासन अरीकी जाहि वीरज अमानतें।
आसन्न कीन्हो है अचलासन अनूपहीकूं,
विजय अनंग कियो अंग अमलानतें॥
वीर मोह आदि जगजीततें अजीत लसें,
रंच न अघात शिवश्यामा सुखदानतें।
वीर्य अजितेश ऐम मगन सुखोदधिमें,
अंत करि अंतको चिरंजीभाव प्रानतें॥१॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(राग बरवा)

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी,
तो गुनमें झलकंत सही॥ टेर॥
सलिल स्वच्छ प्रासुक तृट भंजन, भरि भृंगार लहूंजी।
पावन पतित पांव तव पूजूं, भवभ्रमनाश चहूंजी॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी,
तो गुनमें झलकंत सही।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

हरि बावन कदलीसुत कुंकुम, जलसंग मेली घसूंजी।
श्रीपतिचरन चढावत तेरे, आकुलताप कसूंजी।
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी,
तो गुनमें झलकंत सही।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत श्वेत अमल अनियारे, करि शुचि थाल भरूंजी।
क्षिति दशमी पावन मनभावन, तव पद पुंज करूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्रायाँक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

सुमन सेवती रैण सुगंधादिक बहु भेट धरूंजी।
उद्दीपन शिवतियको करिकैं, विजय मनोज करूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

फैनी सुखदैनी क्षुतखैनी, चरु बहु भांति धरूंजी।
भरि वर थार वारि तव पदपें, क्षुत परचाहि हरूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

प्रज्वलित ललित गलततमभर वर, दीप उदोत करूंजी।
भारतीश ! तुव करत आरती, आरति सकल हरूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

कृष्णागर कर्पूर शिलारस, मलयज चूर करूंजी।
दशविध बंधक फंद प्रजारन, दाहकसंग धरूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

शुभ सहकार अनार नरंगी, निंबुक थार भरूंजी।
शिव उरोज श्रीफल फलपावन, ये फल भेट धरूंजी॥ हो०॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल गंधाक्षत सुमन चरूवर, दीप उदोत करूंजी।
धूप दशांग पूररस फल वर, वसुविध अर्घ धरूंजी॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी,
तो गुनमें झलकंत सही।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जयमाला

(दोहा)

अजितवीर्य जिनदेव तुव, पदनीरज नमि भाल।
धरि धीरज जय जस सुखद, भनूं विशद जयमाल॥१॥

(दीपकला छंद)

जय अजितवीर्य वीरज अपार, तुमकूं मम प्रणमन बार बार।
सुख आशा धरि चिरतें जिनेश, भवमें हम श्रम ठाने अशेष॥२॥

सुखजाति निराकुलता न जानि, जडसंग किई निजशक्ति हानि।
गुरुके मुखतें अब भेद पाय, निजमें तुम रूप रह्यो सु छाय॥३॥

तुम समवसरन रचना बखान, नहि बरन सकें धरि च्यार ज्ञान।
निज नर भव पावन करन हेत, मैं बरनूं कछु आनंद उपेत॥४॥

धनु पांच सहस भुवितें उतंग, सोपान सहस विंशति अभंग।
लंबे इक कोशतने सुजानि, इक कर उन्नत आयाम मानि॥५॥

योजन तसु द्वादस व्यास रूप, मणि-नील-शिला ऊपरि अनूप।
तहं प्रथम शाल वर धूलिशाल, पणरत्नरचित युत छवि विशाल॥६॥

तिहके चव द्वारनितैं सुजान, चौडी इक कोश गली महान।
मणि फटिक भीति चहुं दिश अनूप, इह गंधकुटी तक रुचिर रूप॥७॥

तिन मध्य प्रथम चहुं दिशमझार, चव वापी संयुत छवि अपार।
जिन बिंब धरे शुचि मानथंभ, मानी-मन-मद-मर्दन उतंग॥८॥

चहुं ओर अवनि धुर वलयरूप, प्रासादपंक्ति तिहमें अनूप।
फुनि वेदी तज कीने प्रवेश, भुवि दुतिय मध्य खाई शुभेश॥९॥

मणिमयतट विकसित कंजव्रात, सोपान रतनमय मन लुभात।
शुक सारिक मोर मराल वृंद द्विज केलि करें नाना अमंद॥१०॥

इम धूलीशालथकी सु जानि, खाई तक जोजन अेक मानि।
फुनि वेदी तजि भुव तृतीय सार, सुवलय इक योजन मान धार॥११॥

पुष्पनिकी बाडी है अनूप, मंडप जु अतान वितानरूप।
थल सुन्दर शिलतल है अपार, तित देव रमें आनंद धार॥१२॥

फुनि स्वर्ण साल सोहै अपार, छविमंडित मणिमय द्वार च्यार।
तोरन वंदनमाला विशाल, बंगलें मुक्ताफल माल भाल॥१३॥

कंगुरे कटनी सीढी सुभेष, कंचन मणिमय राजै अशेष।
शुक कोक मयूरादिक स्वरूप, मणि चित्र विविध झलकै अनूप॥१४॥

सुर यक्ष तहां दरवान सार, नवनिधि द्वारै ठाडी अपार।
आगैं दुहु औरनकूं महान, गलिअें विचरनकूं शोभमान॥१५॥

तिनमें द्वय द्वय अतिरुचिररूप, घटधूप नृत्यशाला अनूप।
तहं द्रम द्रम द्रम बाजत मृदंग, सुरबाल नचै वर ताल संग॥१६॥

सननन सारंगी सनननात, पग नूपुर झुनन्न झुनननात।
ताथेई ताथेई ताथेई चलंत, फिर फिर फिर फिर फिरकी लहंत॥१७॥

लचकत कटि कर ग्रीवा सु सार, दरसात नवूं रस छवि अपार।
तननं तननं तननं सुवीन, गतिपूर बजें स्वर सप्त पीन॥१८॥

लय ग्राम गमक मूर्छा सुधार, उचरंत तरल तानें अपार।
इत्यादिक सजि श्यामाअनूप, जगपति जस वरनत भक्तिरूप॥१९॥

वन च्यार चहूं कौनै मझार, युत वेदी गिरि सर सरित सार।
वापी बंगले रजरत्नरूप, क्रीडैं सुर नर खग तहं अनूप॥२०॥

चंपक छदसप्त अशोक आम, तरु चैत्य चैत्ययुक्ताभिराम।
इक योजन चौथी भूमि येम, अब वरनत हैं आगें सु जेम॥२१॥

वेदी तजि ध्वजपंकति विशाल, इक योजन पंचम भू रसाल।
फुनि रजतकोट पूरब समान, राजें अनुपम रचनानिधान॥२२॥

दरवान जहां सुरनाग जान, सन्मुख अदभुत राजें महान।
फुनि षष्टमि भुवि योजन मझार, वन कल्पवृक्ष शोभे अपार॥२३॥

तरु सिद्ध चहूं दिश हैं शुभेश, युत सिद्ध बिंब राजें नगेश।
मंदारन मेरुक पारिजात, संतानकयुत इम च्यार भांत॥२४॥

वेदी तजि फुनि योजन सु आध, भुवि सप्तमि राजत हरि विषाद।
चहुं दिशमें नव नव तूप शृंग, जिनप्रतिमायुत छविके प्रसंग॥२५॥

फुनि फटिक कोट शोभा अमान, सबतें अदभुत राजें महान।
गोपुर पन्नासम लसत जास, सुर कल्प सुभग दरवान जास॥२६॥

गलियनकी वेदी युत महान, वेदी तक षोडश भींत जान।
तिनपैं खंभन पर फटिक रूप, श्रीमंडप राजत है अनूप॥२७॥

मुक्ताफलमाला रत्नघंट, घटधूप आदि रचना महंत।
सब थलतें अष्टम भू मझार, रचना अदभुत आनन्दकार॥२८॥

तिनमें चहुं ओर गली जु टार, दश दोय सभा शोभै सुसार।
मुनि कल्पसुरी अजिया सुजानि, तिय ज्योतिष व्यंतर भुवन मानि॥२९॥

व्यंतर भावन ज्योतिष जु देव, कल्पामर नर पशु येम भेव।
फुनि भींतर वेदी मध्य जान, है प्रथम पीठ पन्ना समान॥३०॥

वसु धनुष तुग द्वयकोश व्यास, वसु पहल द्विगुन छवि गोल जास।
ता परि च्यारों दिश यक्ष देव, वृषचक्र धरें शिरपै स्वमेव॥३१॥

जिनभक्त तनो तिहं तक प्रवेश, फुनि दुतिय पीठ कलधौत भेश।
चव धनुष तुंग ध्वजयुत स्वरूप, तहं मंगल द्रव्य धरे अनूप॥३२॥

फुनि तृतिय पीठ नग जटित सार, चव धनुष तुंग रचना अपार।
तिह ऊपर गंधकुटी रसाल, छविपूरति गंध धरें विशाल॥३३॥

सुरतरुके पुष्पनिकी अनूप, लूंबत है माल रसालरूप।
युत पत्र पुष्प किसलय अपार, छवियुत अशोक तरु शोकहार॥३४॥

पदतर चव सिंहनके सु रूप, यह विष्टरसिंह लसै अनूप।
सब रतनजटिल सोहै अपार, सुरधनुसम प्रसरित जोति जार॥३५॥

तिहपैं चतुरंगुल व्योम टार, पदमासन जिन छवि निर अधार।
अनुपम भामंडलको उदोत, लखि कोटिक रवि छवि छीन होत॥३६॥

भविजनकूं भव दरसात सात, महिमा तिनकी बरनी न जात।
घनसम धुनि सब भाषा जतात, भ्रमबंस अंस कहुं ना रहात॥३७॥

शिर छत्र तीन शशिकूं लजात, प्रभुता तिहुं लोकनकी जतात।
सित चामर गंग तरंग जेम, चवसठि मित सुर ढारें सपेम॥३८॥

तुव धुनिबल मनु हरि मदनबान, तुम ढिग डारत सुर मुद महान।
सो पुष्पवृष्टि बरनी न जात, झषकेतुपराजयकूं जतात॥३९॥

जगजीवनकूं धुनि पूरि इष्ट, सुरताडित दुंदुभिनाद मिष्ट।
रिपु मोह जयो ह्वैके निरोष, मनु तास विजय भाषै सुघोष॥४०॥

क्रीडा चिदचिंतन अतुल जास, कवि कौन कहै बुधिबलविकास।
षट द्रव्य अमित शक्ती न अंत, तिहुं कालमयी सत्ता अनंत॥४१॥

पर्याय अनंत लिये जु ताहि, झलकै गुनभाग अनंत मांहि।
अनुभव करिकै वरने जु केम, मिसरी चखि मूक भनें न जेम॥४२॥

जिय जातिविरोधी वर छांडि, उर प्रीति धरें आनंद मांडि।
तहं रोग शोक व्यापै न भूर, दुख सकल नशें आवे हजूर॥४३॥

दुख देष दोषवर्जित विराग, तव राग भये नाशें कुराग।
इम अतिशय असम धरें अपार, मंडित निर आकुल सौख्यसार॥४४॥

यह छवि चितवन उपवन मझार, मेरो मन रमन चहै अपार।
अरजी अब ये सुनिये कृपाल, दुरभाव अविद्या टाल टाल॥४५॥

समरस सुख निज उर मंडि मंडि, पर चाह दाह दुख खंडि खंडि।
प्रकटो उर परउपकारवानि, निशदिन उचरूं तुम सुगुन गान॥४६॥

तुम वैन सुधारसपान सार, चाहूं भव भव आनंदकार।
तुम भक्त संतजनको सुसंग, मति होहु कुमतिधरको प्रसंग॥४७॥

परनिंदा परपीडन कुवानि, मति होहु कभी निज सुगुनहानि।
सद्गुरुचरणांबुजसेव सार, दीजे जगपति भव भव मझार॥४८॥

तुव दरश करूं परतक्ष देव, यह चाहि हिये वरतै सुमेव।
पावें जब लों नहि मोक्षथान, तबलों यह देहु दयानिधान॥४९॥

हम जाचत हैं कर जोरि जोरि, अघबंधन मेरे तोरि तोरि।
निजबोधसुधासुखको भंडार, अब ''थान'' हिये प्रकटो अपार॥५०॥

(दोहा)

कननि नंद आनंदकर, करो विघ्नगन नाश।
पद्मचिह्नध्वज जनम थल, नगरि अयोध्या जास॥५१॥

(सुन्दरी छंद)

निज स्वरूप हिये दरसावनी, सकल पातिगताप नसावनी।
अजितकी जयदा जयमालही, धरत कंठ लहें शिवबालही॥५२॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सीमंधर युगमंधर बाहु सुबाहुजी,
संजातक अरु स्वयंप्रभू सुखदायजी।
ऋषभानन अरु अनंतवीर्य मनमोहने,
सुरप्रभू रु विशालप्रभू अति सोहने॥

अवर वज्रधर चंद्रानन अति चारु हैं,
चंद्रबाहु रु भुजंगम ईश्वर सार हैं।
नेमप्रभू अरु वीरसेन वरनाम ये,
महाभद्र अरु देवयशहि अभिराम ये॥

अजितवीर्य इम विंश परम जिनदेव हैं,
हरैं तिमिर मिथ्यात्व करैं सब सेव हैं।
इह्वै भक्ति धरि भव्य यजें मन त्यायकैं,
ते नर सुर सुख भोगि वरें शिव जायकैं॥

(ग्रन्थ कर्त्ता परिचय-कवित्त)

सार शुचि स्तुति ये रची है पुर टोंक थान,
कुल अजमेरा फौजसिंह जास तात हैं।
विधिमुखं जोक निधि इंदु साल विक्रममें,
वार शशि अश्वनि नौमी अवदात है॥१॥

(दोहा)

गृहपति दूनपति हि के, संघी पन्नालाल।
वृषवत्सल तिन पाठ यह, कीनो सोधि रसाल॥२॥

सफल करन पर्याय निज, अरु परको हित जान।
विना बुद्धि थुति करनपैं, मति हसियो मतिमान॥३॥

७ये विनती कर जोरिकैं, लीज्यो चूक सुधार।
करियो भक्ति जिनेशकी, भरियो पुण्य भंडार॥४॥

॥ इति विदेहक्षेत्रस्थविंशतिविद्यमानतीर्थंकरपूजा समाप्ता ॥